RNI : UPHIN/2001/05232 ISSN : 0972-4737 SSP/LW/NP/61-2020-22
जून, 2020/June., 2020 वर्ष–17 अंक–01 (199)/Year-17 Vol-01 (199) प्रकाशन तिथि 10 जून 2020 मूल्य 30/–

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

जीर्णोद्धार की ओर निहारती प्राचीन धरोहर

भोजपुर, जिला–धौलपुर (राजस्थान)

ग्राम–जयपुर, जिला–बांकुड़ा (प.बंगाल)

ग्राम–दावदा, जिला–ईडर (गुजरात)

परिचय पृष्ठ ३१ पर....

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा प्रकाशन

नव वर्ष एवं श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के

125वां स्थापना वर्ष महोत्सव (2019-2020) पर

महासभा के सभी केंद्रीय व पदाधिकारी तथा कार्यकताओं एवं

समस्त जैन समाज को हार्दिक बधाई व शुभकामनायें

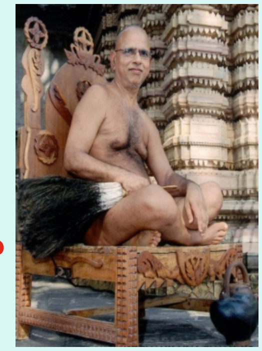

: शुभाकांक्षी : समस्त हपावत परिवार

ShreeKaviraj Group

- M/s. Global Waste Management Cell Pvt. Ltd.
- M/s. Vishwashakti Construction
- M/s. ShreeKaviraj Infratech Pvt. Ltd.
- M/s. K. K. Carrier
- M/s. Falguni Enterprises
- ShreeKaviraj Interprises Pvt. Ltd.
- Greenviro Infratech Pvt. Ltd.

: Office :

10- Atul Niwas,
20/21, Ist Floor,
7th Khetwadi,
Mumbai- 400004

E-mail :jnjain@kavirajgroup.com
Info@kavirajgroup.com
Website : www.Globalwaste.co.in
Tel : 02243402600

जमनालाल हपावत - लक्ष्मीदेवी हपावत

राष्ट्रीय कार्याध्यक्षः- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

वरिष्ठ संरक्षक एवं पूर्व महामंत्रीः- श्री भा. दिग. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

Kamlesh-Darshana, Vipul-Kusum, Rajkumar-Soniya, Faiguni, Yesa, Heena, Mahi, Punya, Charvi, Veer Jain Hapawat

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

संस्कृति संरक्षण की मासिक पत्रिका

वीर निर्वाण संवत् 2546

(वर्ष-17), अंक-(01) 199, जून 2020 (Year-17), Vol.-(01) 199, June 2020

इस अंक में ...

सम्पादकीय	-	प्रो.डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर'	04
श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर, पोरसा (म.प्र.)	-	डॉ. नवनीत कुमार जैन	06
पर्वत और गुफाशिल्प	-	डॉ. सूरजमल बोबरा	08
दिगम्बर जैन नसियां कीर्तिस्तंभ आमेर ...	-	महेन्द्र कुमार पाटनी	13
प्रजापति ऋषभदेव	-	आचार्य विद्यानन्द मुनि	13
बिजवाड जिला देवास की तीर्थंकर प्रतिमा	-	नरेश कुमार पाठक	14
कंकाली के पुरातत्व में अंकित विदेशी	-	डॉ. संगीता सिंह	15
गंधर्वपुरी (सोनकच्छ), म.प्र. छठी से 17वीं...	-	मनीष जैन	18
हडवल्ली (कर्नाटक) एक संक्षिप्त परिचय	-	स्फूर्ति जैन	22
एल्लोरा में जैन संस्कृति की विशालता	-	महावीर दीपचंद ठोले	26
नगरश्रेष्ठ नट्टल साहू और महाकवि विबुद्ध श्रीधर			28
मध्य युग में जैनों का चिकित्सा और औषधि क्षेत्र में योगदान			29
समाचार दर्शन	-		30
समाज के महानुभावों से प्राप्त दानराशि का विवरण			32

तीर्थ संरक्षिणी महासभा का सदस्यता शुल्क

1.	परम संरक्षक	-	25,00,000/- रु.
2.	वरिष्ठ संरक्षक	-	11,00,000/- रु.
3.	विशिष्ट संरक्षक	-	5,00,000/- रु.
4.	संरक्षक	-	1,00,000/- रु.
5.	परम सम्मानित सदस्य	-	51,000/- रु.
6.	सम्मानित सदस्य	-	25,000/- रु.
7.	विशिष्ट सदस्य	-	11,000/- रु.
8.	आजीवन सदस्य (10 वर्ष)	-	5,000/- रु.
9.	साधारण सदस्य (1 वर्ष पत्रिका जायेगी)	-	1,100/- रु.

नोट- उक्त सभी श्रेणी के सदस्य तीर्थ संरक्षिणी महासभा की साधारण सभा के सदस्य होंगे तथा पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी।

'प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार' पत्रिका का सदस्यता शुल्क

आजीवन- 2,500/- रुपये (10 वर्ष) त्रैवार्षिक- 800/- रुपये वार्षिक- 300/- रुपये

दानराशि भेजें ड्राफ्ट/चेक/ऑनलाइन –

"BDJ (Tirth Sanr) Mahasabha" SBI Aishbagh Branch
Branch Code - 2504 A/c No.- 10130995311
IFS Code - SBIN0002504

लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
'प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार' संबंधी सभी विवादों के लिए न्यायक्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।

: मुख्य कार्यालय :

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर काम्पलेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
फोन : 011-23344668, 23344669 **Email :** digjainmahasabha@gmail.com

Head Office : Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (T.S.) Mahasabha
Shri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aishbagh, Lko.226004
Phone : 0522-2662581, Cell. : 09129065900, 09335920972, **09129065900**
Website : jainpracheenteerth.org ⁎ Email : tsmahasabha@gmail.com

Printed at : Maheshwari & Son's, Motinagar, Lucknow

श्री निर्मल कुमार जैन
दिल्ली-रा. अध्यक्ष

श्री महेन्द्र कुमार जैन
चेन्नई-रा. कार्याध्यक्ष

श्री राजकुमार जैन सेठी
कोलकाता-रा. महामंत्री

श्री जमनालाल हपावत
मुम्बई-वरिष्ठ संरक्षक

श्री धर्मचन्द पहाड़िया
जयपुर-रा. कार्याध्यक्ष

श्री सुरेन्द्र कुमार ठोलिया
हैदराबाद-रा. कार्याध्यक्ष

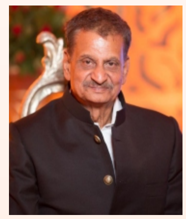
श्री महेन्द्र कुमार जैन
इन्दौर-रा. कार्याध्यक्ष

श्री जयकुमार कोठारी
भीलवाड़ा-रा. कार्याध्यक्ष

श्री महिपाल पहाड़िया
जालंधर-रा. उपाध्यक्ष

श्री संजय जैन एडवोकेट
दिल्ली-रा. उपाध्यक्ष

प्रो. डॉ. अभय कुमार जैन
लखनऊ-रा. उपाध्यक्ष

श्री नाथूलाल जैन
उदयपुर-रा. उपाध्यक्ष

संयुक्त महामंत्री : कमल कुमार जैन रांवका
जैन मंदिर के सामने, सआदतगंज, लखनऊ
फोन : 0522-2251234 मो : 09335920972

: Chief Editor :
Dr. Bhagchandra Jain 'Bhaskar'
Near Kastoorba Library, Sadar Nagpur
Ph.: 0712-2541726, 09421363926
Email : drbcjain@hotmail.com

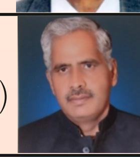
: सम्पादक :
नरेश कुमार पाठक
24 रामानुजनगर, सिटी सेन्टर, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल : 08223915111

: सह-सम्पादक :
प्रो. डॉ. पुष्पलता जैन
निकट कस्तूरबा लाइब्रेरी, सदर नागपुर (महा.)
फोन : 0712-2541726

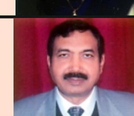
विमल चन्द जैन (Chartered Accountant)
सेठ लाधूलाल जैन मार्ग, डालीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)
मोबाइल : 09415101181

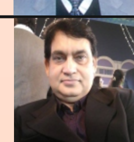
: प्रकाशक :
सुधेश जैन
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड,
ऐशबाग, लखनऊमोबाइल : 09415108233

सम्पादकीय ...

कोसल जनपद में जैन संस्कृति

सरयू नदी के किनारे बसे कोसल का उल्लेख अप्रत्यक्ष रूप में ऋग्वेद में आया है- उत्तया सद्य आर्यो सरयोरिन्द्रपारतः अणोचित्ररथा वधीः, ४.३०, १८। चित्ररथ इस प्रदेश का प्रमुख रहा होगा। वाल्मीकि रामायण (अयोध्या ३२.१७) में उसका उल्लेख आता है। रामायणकाल में यही कोसल दो भागों में विभाजित हो गया था- उत्तर कोसल और दक्षिण कोसल। उत्तर कोसल वर्तमान अवध (उ.प्र.) का प्राचीन नाम है और दक्षिण कोसल की राजधानी श्रावस्ती थी। विजयेन्द्र कुमार माथुर ने इस प्रदेश की लम्बी सीमा देकर वर्तमान रायपुर और विलासपुर (म.प्र.) जिले तथा इनके परावर्ती क्षेत्र को सम्मिलित किया है (ऐतिहासिक स्थानावली)। उत्तर कोसल स्थूल रूप से गंगा और सरयू का मध्यवर्ती प्रदेश था। कौसल्या दक्षिण कोसल की राजकुमारी थी और उत्तर कोशल के राजा दशरथ को ब्याही गयी थी। कुणाल उत्तर कोसल का ही कदाचित् दूसरा नाम रहा होगा।

कोशल का राजा प्रसेनजित किसी समय काशी का भी राजा था (दीघः लोहिच्चसुत्त)। इससे पता चलता है, कोसल काशी से अधिक सबल जनपद था। उसके पूर्व या दक्षिण-पूर्व में मगध और पश्चिम में पंचाल और कुरु जनपद थे। उसके उत्तर-पूर्व में मल्ल और वज्जि राष्ट्र थे और दक्षिण में चेदि और वंस राष्ट्र। साधारणतः रापती (एरावती) और सरयू के बीच का प्रदेश कोसल कहा जाता था।

तथागत बुद्ध के काल में कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी। जेतवन विहार भी यहीं था। विशाला का पूर्वाराम भी यहीं था। लगता है, अयोध्या के साथ ही दूसरा प्रधान नगर था साकेत। साकेत और श्रावस्ती के बीच लगभग सात योजन की दूरी थी (धमपदट्ठकथा)। डॉ. नलिनाक्ष दत्त और कृष्णदत्त वाजपेयी ने सुजानकोट के साथ साकेत का समीकरण किया है। पर यह ठीक नहीं लगता। मगध से श्रावस्ती जाने वाले मार्ग पर सुजानकोट के खण्डहर नहीं पड़ते। फाह्यान ने अयोध्या का कोई वर्णन ही नहीं किया।

पौराणिक परम्परानुसार अयोध्या का प्रथम सम्राट् सूर्यवंशी इक्ष्वाकु हुआ जिसने अपने सौ पुत्रों को भारत के सारे प्रदेश सौंप दिये। इसी अनुश्रुति में सम्राट्, दिलीप, रघु, दशरथ, राम और कुश हुए जिन्होंने अयोध्या पर शासन किया। इस वंश का अन्तिम (१२५वां) नरेश इक्ष्वाकुवंशी सुमित्र था जिसे मारकर चतुर्थ शती ई. पू. में मगध नरेश नन्दिवर्धन ने अयोध्या को मगध में सम्मिलित कर लिया। कहा जाता है, उसने एक स्तूप भी बनवाया था जिसकी पहचान वर्तमान मणिपर्वत से की जाती है।

इसके बाद कोसल देश और अयोध्या नगरी क्रमशः नन्द, मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, मौखरिवर्धन, यशोवर्धन, गुर्जर-प्रतिहार, गाहड़वाल, राजपूतों और मुगल सम्राटों के अधिकार में रही। मुगलकाल में तो अवध के नवाबों ने इसे एक धर्मतीर्थ के रूप में विकसित कर दिया था। सन् १७२२ ई. में मुहम्मद अमीन सादतखाँ बुरहानुल्मुक नामक सूबेदार ने वहीं रहकर अवध के नवाबी राजवंश की स्थापना की थी। इसी राजवंश के दूसरे नवाब सफदरजंग के समय फैजाबाद नाम से एक कस्बा भी बसने लगा जिसे तीसरे नवाब शुजाउद्दौला ने एक रमणीक नगर बनाकर उसे अपनी राजधानी ही बना लिया। अयोध्या का राजनीतिक महत्त्व यहीं से समाप्त हो जाता है। कहा जाता है, महमूद गजनवी ने सन् १०३२ ई. के आसपास सर्वप्रथम अयोध्या पर

आक्रमण किया था किन्तु अयोध्या के जैन धर्मनुयायी श्रीवास्तव राजाओं ने उसे यहाँ से खदेड़ भगाया था। सन् १२०० ई. के लगभग सुल्तान मुहम्मद गौरी के भाई मखदूमशाह जूरन गौरी ने अयोध्या पर आक्रमण किया और नगर के सर्वप्रसिद्ध मन्दिर आदिनाथ जिनालय को ध्वस्त करके वहाँ एक मस्जिद बना दी। यही स्थान शाहजूरन का टीला कहा जाने लगा। इस अयोध्या को अफगानिस्तान में बताना एक दूर की कौड़ी जैसे लगता है।

जैन संस्कृति और इतिहास में कोसल प्रदेश का बड़ा महत्त्व है। उसको परम्परा में अयोध्या का गहरा सम्बन्ध पांच तीर्थकरों से रहा है। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव के गर्भ और कल्याणक, दूसरे तीर्थकर अजितनाथ, चौथे तीर्थंकर अभिनन्दन, पांचवें तीर्थकर सुमति और चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक मनाने का सौभाग्य अयोध्या को ही मिला है। उत्तरपुराण (सर्ग ४८), रविषेणीय पद्म पुराण (सर्ग २०, १-२), हरिवंशपुराण (सर्ग ६०), आदि ग्रन्थ भी इसी तथ्य को परिपुष्ट करते हैं। जिनसेन ने आदिपुराण में अयोध्या के ही साकेत (आदि १२.७७), सुकोशला (आदि १२.७७), और विनीता (वही, १२.७८) नाम दिये हैं, जो उसकी विशेषताओं की ओर संकेत करते हैं। आदिपुराण में ही उसे भरत चक्रवर्ती और राम-लक्ष्मण आदि की जन्मभूमि के रूप में स्मरण किया गया है। पुण्यास्रवकथाकोष (कथांक ५ पृ. २२३) के अनुसार यहीं क्षत्रिय सुप्रभ और रानी प्रहलादिती के सूर्योदय और चन्द्रोदय नाम के पुत्र उत्पन्न हुए जो भगवान् ऋषभदेव के साथ दीक्षित होकर मारीचि के साथ भष्ट हो गये। आदिपुराण (७-४१; १२.७६) के अनुसार अयोध्या की अवस्थिति दो द्वीपों में थी-धातकीखण्ड और जम्बूद्वीप। धातकीखण्ड के पूर्व भागस्थ पश्चिम विदेह के गन्धिल देश की नगरी को अयोध्या कहा है और जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भरतक्षेत्र में विद्यमान अयोध्या भरत चक्रवर्ती आदि की जन्मभूमि अवधवर्ती उत्तर कोसल की अयोध्या थी। संभव है, धातकीखण्डवर्ती अयोध्या दक्षिण अयोध्या रही हो।

जैन परम्परा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने इसी अयोध्या में कर्मयुग का प्रारंभ कर असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य इन छह कर्मों की शिक्षा दी थी। यहीं पर उन्होंने अपनी ब्राह्मी और सुन्दरी नामक पुत्रियों के माध्यम से लिपि और अंक विद्या की शिक्षा

दी थी। भरत ने यहीं सार्वभौम साम्राज्य स्थापित कर हमारे देश का नाम भारतवर्ष रखा था (हरिवंश पुराण ८.५५, १०४ व ८.२१) परशुराम और कीर्तिवीर्य की घटनायें भी यहीं हुई थीं।

विमलसूरि (प्रथमशती ई.) के पउमचरिय (३.११३) के अनुसार अयोध्या नगरी नौ योजन चौड़ी और बारह योजन लम्बी थी जिसका निर्माण कुबेर ने किया था। उसका उत्तुंग प्राकार स्वर्णमयी था। इसी तरह महाकवि स्वयम्भू (८-६ वीं शती) ने पउमचरिउ की द्वितीय सन्धि में अयोध्या और उसके समीपवर्ती प्रदेश का वर्णन किया है। तदनुसार अयोध्या में ऋषभदेव का जन्म हुआ और प्रयाग में उनको ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ अयोध्या को उत्तर-दक्षिण श्रेणियों में विभक्त करने का उल्लेख मिलता है (२. १-८) जो उत्तर-दक्षिण अयोध्या का स्मरण कराते हैं। ऋषभदेव का विहार हस्तिनापुर में हुआ जहाँ श्रेयांसकुमार ने उन्हें इक्षुरस से पारणा करायी। यह उल्लेख इस तथ्य को रेखांकित करता है कि हस्तिनापुर कभी अयोध्या राज्य के अन्तर्गत रहा है। अयोध्या को ही साकेत नगरी (सक्केय णयरि, २. ५) के रूप में उद्धृत किया गया है। बाहुबली का राज्य पोदनपुर भी इसी के आसपास ही होना चाहिए क्योंकि भरत के मन्त्री आधे निमिष में वहाँ पहुँच गये थे (४.४)। संभव है कुरूप्रदेश में पोदनपुर रहा हो और अयोध्या तथा पोदनपुर के बीच कहीं भरत-बाहुबलि का युद्ध हुआ हो। अयोध्या का महत्त्व देखते हुए जैन परापरा में उसे जो आदिम नगरी कहा गया है वह सही लगता है। राम को वैदिक साहित्य में पदम भी कहा जाता था। यह नाम वस्तुतः जैन परम्परा से लिया गया है। विमलसूरि का पउमचरिय तथा रविषेण का पदमचरित रामाख्यानक हैं जिनके अनुकरण पर वैदिक पद्‌मपुराण का लेखन किया गया है। वैदिक श्रीमद्‌भागवत् आदि पुराणों में ऋषभदेव का ससम्मान विस्तार से जो जीवन चरित दिया गया है वह भी जैन परम्परागत अयोध्या की स्थिति को स्वीकृत और समर्थित करता लगता है।

जैन कथा साहित्य में अयोध्या को केन्द्रितकर अनेक ग्रन्थ लिखे गये। तिलकमंजरी में धनपाल ने इसी प्रसंग में उत्तर कोशल की अयोध्या की रमणीयता का वर्णन बड़ी अलंकृत शैली में किया है। हरिभद्रसूरि की समराइच्चकहा और हेमचंद्र का त्रिषष्टिशलाका महापुरुषचरित भी इसी संदर्भ में स्मरणीय है। उद्योतनसूरि की कुवलयमाला की अधिकांश कथायें कोशल और कौशाम्बी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। उनकी सौन्दर्य और समृद्धि पर कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। हरिवंश पुराण (८.४) ने तो यहाँ के सर्वतोभद्र प्रासाद को ८१ खण्डों का बताया है। इन सभी वर्णनों को यदि किसी एक सीमा तक भी सही माना जाये तो यह निश्चित है कि अयोध्या लगभग छठी शताब्दी में एक समृद्ध जैन नगर था जहाँ वैदिक और बौद्ध सम्प्रदाय भी समानान्तर रूप से प्रचलित थे।

गुप्तकाल तक अयोध्या राजधानी के रूप में अस्तित्व में था पर मध्यकाल में उसका नाम लुप्त-सा होता दिखाई देता है। विविध तीर्थकल्प ने इसे जैन नगरी के रूप में प्रतिष्ठित किया है और उसकी चौड़ाई ६ योजन तथा लम्बाई १२ योजन बताई है। नगरी से १२ योजन दूर अष्टापद पहाड़ माना है जहाँ आदिनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। नगर के चारों ओर चौबीस तीर्थकरों की मूर्तियों की प्रतिष्ठा होने की सूचना इसी ग्रन्थ से मिलती है। यहाँ से अष्टापद की दूरी सही नहीं है।

अयोध्या के साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर यह तो निश्चित है कि यहाँ जैन पुरातत्त्व काफी समृद्धि होना चाहिए। पर आश्चर्य है, अभी तक यहाँ कोई विशेष प्राचीन जैन स्थल नहीं मिले। कटरा मन्दिर कदाचित् प्राचीनतम मन्दिर कहा जा सकता है। यहाँ सं. १२२४ की तीर्थकर नेमिनाथ की प्रतिमा विद्यमान है। यहाँ की अन्य प्रतिमाओं में सं. १५४८ तथा १६२६ खुदा हुआ है। यह मन्दिर १७वीं शताब्दी का है। इसके प्रांगण में सुमतिनाथ के चरण चिह्नों पर निर्मित टोंक पर जो अभिलेख मिला है उसमें वि.सं. १७८१ का उल्लेख है। उसका शिखर शंक्वाकार और लहरदार अलंकृत है। टोंक की रचना गुंबद के साथ अष्टकोणीय है। मणिपर्वत ६५ फीट ऊँचा है। इसमें लंबी-चौड़ी ईटों का ढेर मिला है जिन पर ''श'' लिखा मिलता है। कुबेर पर्वत २८ फीट और सुग्रीव पर्वत १० फीट ऊँचा है। मणिपर्वत का एक रेखाचित्र कनिंघम ने तैयार किया था। यहीं कालकाराम बौद्ध विहार भी होना चाहिए (मनोरथपूर्णी, भाग २, पृ.४८२)। ह्यूनशांग ने भी इसका वर्णन किया है।

रामकोट में प्राप्त कायोत्सर्ग में जैन केवलि की मूर्ति मिली है। संभव है, यह आदिनाथ की मूर्ति हो। फैजाबाद संग्रहालय में यह मूर्ति रखी हुई है। गोमती नदी के तटवर्ती गाँव एदेमऊ में यह मूर्ति मिली थी जो लगभग आठवीं शती की है।

अनन्तनाथ, अभिनन्दननाथ, शीतलनाथ, अजितनाथ, आदिनाथ आदि तीर्थकरों के नाम से टोंके हैं पर वे अधिक प्राचीन नहीं लगतीं। इन टोंकों और टीलों की यदि खुदाई की जाये तो निश्चित ही यहाँ जैन मन्दिर और मूर्तियों का अंबार मिलेगा। उदाहरण के तौर पर खुदाई के आधार पर अनन्तनाथ की टोंक को कनिंघम ने जैन टीला कहा था। आदिनाथ टोंक के आसपास का क्षेत्र जैन क्षेत्र लगता है जिसे मस्जिद के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। अभी हाल ६ दिसम्बर १६६२ में जब वह तोड़ी गई तो वहाँ ऊपरी परत से हिन्दू मन्दिर होने के प्रमाण तो मिले पर उसे और नीचे नहीं खोदा गया इस भय से कि कहीं यह जैन मन्दिर सिद्ध न हो जाये। वस्तुतः अयोध्या में जैन पुरातत्त्व भरा हुआ पड़ा है। यदि उसे ढंग से उद्‌घाटित किया जाये तो उसके प्राचीन वैभव का पता चल जायेगा। बाबरी मस्जिद के नीचे का मंदिर जैन मंदिर ही होना चाहिए।

अयोध्या का समीपवर्ती क्षेत्र भी जैन पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। जैसे रतनपूरी धर्मनाथ की जन्मभूमि मानी जाती है, (पद्‌मपुराण, ६८.१४४; वरांगचरित, २७.८४; उत्तरपुराण ६१. १३)। यहाँ के मन्दिर में सं. ११६० की प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ की मूर्ति भी है। इसी तरह त्रिलोकपुर के पार्श्वनाथ मन्दिर में भी सं. ११६७ की तीर्थकर नेमिनाथ की मूर्ति मिलती है। महापुराण, हरिवंशपुराण आदि जैन पुराणों में अयोध्या का अच्छा वर्णन मिलता है।

१६८७ में बी.बी. लाल के नेतृत्व में अयोध्या में खुदाई की गई थी। पर वह बहुत सीमित थी। इसीलिए शायद अभी तक इसकी रिपोर्ट देखने में नहीं आई। जो भी संक्षिप्त रिपोर्ट उन्होंने दी उसके आधार पर यह कहा गया कि इस नगर का पुरातत्त्व ४.५ किमी.

शेष पृष्ठ ७ पर...

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, पोरसा (म.प्र.) की जैन प्रतिमाएँ एवं अभिलेख

❑ डॉ. नवनीत कुमार जैन

भारत गणराज्य के मध्य प्रदेश प्रांत के सुदूर उत्तरी छोर पर अवस्थित चंबल संभाग के अन्तर्गत मुरैना जिले की पोरसा तहसील में विद्यमान श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में कई प्राचीन पाषाण एवं धातुनिर्मित जिन प्रतिमाएँ विराजमान एवं पूजनीय हैं, जो जैन पुरावशेषों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। पोरसा जिला मुख्यालय मुरैना से करीब ३५ किमी. की दूरी पर पश्चिम में मुरैना से वाया अंबाह होकर भिण्ड जाने वाले सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ केवल सड़क मार्ग के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। पोरसा तहसील से चंबल संभाग के ही भिण्ड जिले की सीमा लगी हुई है। पोरसा में वर्तमान में तीन जैन मंदिर विद्यमान हैं और तीनों ही दिगम्बर जैन संप्रदाय से संबंधित हैं और तीनों में ही प्राचीन जैन प्रतिमाएँ विराजित एवं पूजनीय हैं। इन तीनों में से सर्वाधिक मूर्तियाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में संगृहीत हैं। तदुपरांत श्री चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में भी अच्छी संख्या में प्राचीन मूर्तियाँ रखी हुई हैं। इनके अलावा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्राचीन मूर्तियों की संख्या काफी कम है और यह मंदिर पोरसा में एक बृहद् भवन के अंतर्गत प्रथम तल पर निर्मित एक विशालाकार कक्ष के अंतर्गत विद्यमान है और इस कक्ष में तीन वेदियों पर धातु एवं पाषाण निर्मित करीब १५ जिन प्रतिमाएँ विराजमान एवं पूजनीय हैं। इनमें से पाँच प्रतिमाएँ ही ऐतिहासिक महत्त्व की हैं और अन्य सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हाल ही में कुछ वर्षों पूर्व विविध कालावधियों में हुई है। ज्ञात हुआ है कि ये प्राचीन प्रतिमाएँ आसपास के स्थलों से लाकर यहाँ स्थापित की गई हैं, परंतु इनके निश्चित स्थान की जानकारी नहीं हो सकी है।

इनमें बलुआ पाषाण निर्मित ल. १ फुट ऊँचाई की एक प्रतिमा

में जिन ऋषभनाथ को साधारण पीठिका पर पद्मासनस्थ दिखाया गया है **(चित्र १)**। कंधों पर कुशगुच्छ से उनकी पहचान ऋषभ के रूप में संभव है। पीठिका पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में संवत् १५१० आषाढ़ सुदि ७ शनिवार (१४५३ ई.) तिथियुक्त लेख में मूलसंघ एवं भट्टारक का उल्लेख ही पठनीय है। इस लेख का पाठ अधोलिखित है–

१. संवत् १५१० वर्षे आषाढ़ सुदि ७ शनौ श्री मूलसंघे भट्टारक

२. ....

बलुआ पाषाण निर्मित ल. ८ इंच ऊँचाई की एक अन्य अभिलेख विहीन प्रतिमा में पंचतीर्थी का निरूपण हुआ है, जिसमें केंद्रीय मूलनायक जिनाकृति को अपेक्षाकृत विशालकाय स्वरूप में परंपरागत सिंहासन पर पद्मासन मुद्रा में विराजमान दिखाया गया है

(चित्र २)। मूलनायक जिन के परिकर में पद्मपत्रों से सज्जित गोलाकार भामण्डल, छत्र, दुन्दुभि, चामरधर एवं उड्डीयमान मालाधर युगल के साथ ही चार लघुकाय जिनाकृतियों को पद्मासन मुद्रा में कमलासन पर विराजित दिखाया गया है। यक्ष-यक्षी का भी प्रावधान हुआ है, परंतु वे अब खण्डित एवं अस्पष्ट हैं। सामान्य रूप से चामरधराकृतियों को अपने एक हाथ से चंवर हिलाते हुए दिखाया जाता है, परंतु इस प्रतिमा में वे अपने दोनों हाथों से एक चंवर धारण किए हुए हैं। किसी भी जिनाकृति की पहचान नहीं हो सकी है। यह प्रतिमा ल. १२वीं-१३वीं शती ई. की जान पड़ती है।

श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित ल.१ फुट ऊँचाई की एक

प्रतिमा में पद्मासनस्थ चंद्रप्रभ का निरूपण हुआ है। साधारण पीठिका पर उनका लांछन एवं नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में संवत् १६७३ फाल्गुण शुक्ल ३ शनिवार (१६१६ ई.) तिथ्यांकित लेख अंकित है, जिसमें मूलसंघ-सरस्वतीगच्छ-वलात्कारगण के अंतर्गत भिण्ड नगर (वर्तमान भिण्ड, मध्य प्रदेश) में प्रतिष्ठा होने का उल्लेख हुआ है।

१. सम्वत् १६७३ फाल्गुण शुक्ल ३ शनी श्री मूलसंघ श्री कुन्द-

२. कुन्द दिगम्बराम्नाये सरस्वतगच्छे बलातकार गणे भिंड नगरे प्रतिष्ठितम्

इनके अलावा धातुनिर्मित एक नेमिनाथ प्रतिमा में उन्हें पद्मासन मुद्रा में एक मोटी पीठ पर लांछन शंख एवं अभिलेख युक्त

दिखाया गया है **(चित्र ३)**। संवत् १६०२ (१५४५ ई.) तिथ्यांकित इस लेख में गुलाबराज द्वारा प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है।

१. सवत् १६०२ वष ३ शममास भाअ

२. गुलाबराजय मति,

इसी मंदिर में ल. १५वीं शती ई. के धातु निर्मित एक लघुकाय पद्मासनस्थ पार्श्व प्रतिमा भी विराजित है, जिसमें उन्हें सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित दिखाया गया है। यह प्रतिमा लेखविहीन है।

-द्वारा घर गृहस्थी सुपर बाजार,
जिला चिकित्सालय के सामने,
माल रोड, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल : 09827587161

पृष्ठ ५ का शेष...(सम्पादकीय)

तक में फैला ही होना चाहिए। उन्होंने इस नगर को ८वीं शती ई.पू. का माना है। हंस बक्कर ने अपनी 'अयोध्या' पुस्तक में इसका उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि चतुर्थ-तृतीय शती ई.पू. की एक जैन मूर्ति Grey Terracota में मिली है। आहत मुद्रायें तथा मूलदेव, विजयमित्र आदि की चतुर्थ शती की मुद्रायें भी यहाँ प्राप्त हुई हैं। मणिपर्वत से नन्दयुग का एक शिलालेख भी प्राप्त हुआ था जिसका अभी तक पता नहीं है (पी. कानेगी-ए हिस्टेरिकल स्केच आफ तहसील फैजाबाद, १८७०, P.24 व F.N.) मणिपर्वत के दक्षिणवर्ती खेत में शुंगकालीन प्रथम शती ई.पू. के राजा धनदेव का संस्कृत शिलालेख भी मिला है (फैजाबाद गजेटियर, पृ.३२)। १८६५ में प्राचीन सिक्के मिले थे जिनमें एक ओर वृषभ या हाथी और दूसरी ओर चैत्यवृक्ष, स्वस्तिक और नन्द्यावर्त आदि जैन चिह्न हैं। इसी तरह भिटौरा गाँव से मौखरि नरेशों के और अयोध्या में सातवीं शती के हर्षवर्धन के सिक्के मिले हैं। गाहडवाल काल का भी पुरातत्त्व यहाँ मिला है। यहाँ के डीह भी हैं। बाद में १०वीं शती से १९वीं शती ई. के अनेक जैन शिलालेख, प्रतिमा लेख भी उपलब्ध होते हैं (८)।

जहाँ तक दक्षिण कोसल का प्रश्न है, वह भी जैन सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। ई. सन् की छठी शताब्दी में कोशल के बड़े भूभाग पर पाण्डववंशी राजाओं का राज्य था। ये राजा सोमवंशी थे तथा वैष्णव धर्मावलम्बी थे। इस वंश का सर्वप्रथम राजा उदयन था जो संभवतः ५वीं शताब्दी ई. के अन्तिम चरण में रहा होगा। कालंजर से प्राप्त एक शिलालेख में सोमवंशी राजा उदयन का उल्लेख है। इस वंश के अनेक राजाओं में नन्नराज का पुत्र महाशिव तीवरदेव का नाम विशेष उल्लेखनीय है जिसने कोसल, उत्कल और अन्य मण्डलों पर अधिकार कर कोसलाधिपति की उपाधि धारण की थी। शिरपुर के लक्ष्मण मन्दिर का निर्माता भी यही राजा था। इसी राजा के उत्तराधिकारियों में महाशिवगुप्त बालार्जुन राजा हुआ जो वैष्णव धर्मावलम्बी होने के बावजूद अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु था। उसकी धर्मसहिष्णुता इसी से समझ में आती है कि उसके राज्यकाल में जैनधर्म का भी विकास हुआ। श्रीपुर में आज भी प्राचीन जैन मन्दिर पाये जाते हैं।

अडमार (बिलासपुर) से प्राप्त एक पार्श्वनाथ की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शती की है (बिलासपुर गजेटियर, १९९०, पृ. २५५)। कुरो (रायपुर) में भी जैन मन्दिर के अवशेष मिले हैं (रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, १९९०, पृ.३०४)। पेण्ड्रा (बिलासपुर) की १२वीं शती की पार्श्वनाथ मूर्ति, बूढ़िखार (बिलासपुर) की १२वीं शती की बृहदाकार तीर्थंकर मूर्ति, मल्लार (बिलासपुर) की ल. ८वीं शती की महावीर प्रतिमा (इ.आ.रि. १९६०-६१), पातालेश्वर मन्दिर में प्राप्त आदिनाथ प्रतिमा (वही), रतनपुर (बिलासपुर) के कठीदेवल मन्दिर में संग्रहीत ल. १२वीं शती की दो जैन तीर्थंकर प्रतिमायें विशेष उल्लेखनीय हैं। ये प्रतिमायें महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इससे दक्षिण कोशल के समृद्ध जैन पुरातत्त्व का संकेत मिलता है।

-प्रोफेसर भागचन्द्र जैन 'भास्कर'
मानद सम्पादक एवं निदेशक पुरातत्त्व विभाग
मोबाइल : 09421363926

पर्वत और गुफाशिल्प

❑ डॉ. सूरजमल बोबरा

ऐसा प्रतीत होता है पर्वत एवं गुफा शिल्प भारत के इतिहास के प्रथम चले कदम हैं।

पर्वत एवम् गुफा शिल्प- मनुष्य के हृदय की सहजतम अभिव्यक्ति हैं। गुफा शिल्प में हम गुफाओं में उत्कीर्ण रेखाचित्रों पर विचार करेंगे। डॉ. वाकणकर के अनुसार भीम बेटका की केसरी गुफा में महीन अश्व के उत्कीर्णक द्वारा रेखात्मक चित्र बनाये गये हैं। इनमें मनुष्य के कमर के नीचे के पाँव बड़े ही सौन्दर्य पूर्ण बनाये गये हैं। उस रेखांकन के निकट मध्याश्मयुगीन वृषभ का चित्र है। वा.ई. ६ गुफा में एक रंगीन वृषभ के चारों ओर उत्कीर्ण रेखायें हैं। मानपुर के पास स्टेलन्टाइट की बनी गुफा में भी एक उत्कीर्ण वृषभ बना है। ऐसे ही उत्कीर्ण चित्र श्री गिरिराज कुमार को कोटा जिले के केवल नगर के निकट शैलाश्रयों में मिले हैं। शैलाश्रयी मानव जैसे-जैसे ताम्राश्मीय ग्रामीण सभ्यताओं के प्रभाव में आया वह प्रकृति के सान्निध्य से दूर होने लगा। भीम बेटका के उत्कीर्णन करीबन ४० हजार वर्ष प्राचीन माने जाते हैं। संदर्भः डॉ. वि.श्रीवाकणकर अभिनंद ग्रंथ पृष्ठ २३।

यहाँ एक संकेत है कि शैल अंकन (गुफाओं के शिल्प) ग्रामीण सभ्यता के विकास के साथ क्षीण होता गया। हम विज्ञान की खोजों के प्रकाश में देखें तो यह रामकाल से अर्थात् तीस हजार वर्ष के पूर्व का ठहरता है। हमें नर्मदा कांठे के इतिहास को इसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

यहाँ एक संकेत पर और विचार करना चाहिए । वृषभ और ऋषभ की परंपरा साथ-साथ है। यह प्राकृतिक व्यवस्था लगती है। ऋषभ ने वृषभ को स्वीकार किया और वृषभों के साथ रहने वाले साधारणजन ने ऋषभ को अपना मार्गदर्शक मान लिया। अपने जीवन का आधार मान लिया। भारतीय मूर्ति शिल्प हर युग में प्रचलित इस वंश के धर्म और यहाँ की संस्कृति से अनुप्राणित होती रही है और किसी देव मूर्ति की पीठ या उसे पीछे से देखना उस मूर्ति का अपमान समझते हुए वह सदैव दीवारों स्तम्भों आदि पर ही उकेरी जाती रही।

संदर्भ- मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती'- 'भारतीय मूर्ति शिल्प एवम् स्थापत्य कला' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित।

इस विचार को हम हड़प्पा-मोहन जोदड़ों की सीलों पर उकेरे शिल्पों के आधार पर देखें तो डॉ. स्नेह रानी जैन के अध्ययन के अनुसार, वे सीलें श्रमण चिंतन व भारतीय संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती हैं। उस काल के अन्य चिन्तन के, कोई शिल्प नहीं मिलते हैं। गुफा चित्र-भीम बेटका के, जिनमें कहीं-कहीं शिल्पांकन भी है एक ऐसी जीवन शैली से जुड़े हैं, जिनमें ग्रामीण जीवन शैली का अभाव था। वैसे यह कहना भी कठिन है कि मोहन जोदड़ों की शिल्पांकन पद्धति कितनी प्राचीन थी, क्योंकि श्रमण चिन्तन तो उससे भी बहुत प्राचीन था, किन्तु नई शोध के अनुसार सेंधव सभ्यता के सूत्र १००० वर्ष पूर्व तक तो जाते ही हैं।

१०००० वर्ष पूर्व (राम काल के पूर्व) पर्वतीय ग्रामीण जीवन शैली भारत में पूर्ण हो चुकी थी। अतः शिल्पांकन पद्धति भी बदल चुकी थी। गुफाओं से बाहर निकल कर शिल्पांकन नये-नये आयाम गृहण करने लगा था। भारतीय इतिहास की त्रासदी है कि सभी ऐतिहासिक निर्णय जैन धर्म का सबसे प्राचीन होने के बाद भी, वैदिक संदर्भो को खींच कर उसे प्राचीन सिद्ध करने पर आधारित है। पर कुछ तथ्यों पर यहाँ विचार किया जा सकता है। यह संस्कृति को, उसे सही रूप में समझने के लिए अत्यावश्यक है।

(१) श्रमण जैन चिंतन में साधु, गृह त्याग कर जंगलों में गुफाओं में त्याग तपस्या करते थे। गुफाओं में रहते हुए साधु या उनके सहयोगी श्रावक अपने आराध्य की मूर्ति दीवारों पर अंकित कर लेते थे। मांगी-तुंगी में पहाड़ पर खुदी मूर्तियाँ अपनी प्राचीनता को मुखर करते हुए इस तथ्य को दोहराती हैं। उन पर काल निर्णय करने वाला कोई संकेत नहीं है। हम यहाँ स्मरण रखें कि राम ने विरक्त होकर मांगी-तुंगी पर्वत श्रृंखला को ही अपनी तपस्थली बनाया था। महावीर के गणधर, भद्रबाहु दक्षिण गमन कर पर्वत की गुफाओं में वास करने लगे तो चन्द्रगुप्त भी उनके साथ थे। वहाँ के कई गुफा शिल्प दर्शनीय हैं। उस काल के कोई अन्य गुफा शिल्प उपलब्ध नहीं। बौद्ध कालीन शिल्प उसके बाद के हैं।

(२) १८८ ई.पू. से ३०३ शुंग काल माना जाता है। इस काल में पश्चिमी घाट के पर्वतों में, आन्ध्र कुल ने अनेक गुफायें बनाईं। जैन गुफा शिल्प की अंतः प्रेरणा श्रमण चिंतन में छिपी है। स्मरण रखें जैन साधु (वह भिक्षु नहीं होता, वह शरीर मंथन से जुड़ा योगी नहीं होता, भस्म-राख शरीर पर नहीं मलता) नग्न-शरीर व संसार से विरक्त अपनी आत्मा में लीन प्राणी होता है। उसे सिंह, नाग, प्रकृति के विचलन से कोई भय नहीं लगता। यही कारण है कि वह अपनी आत्मा में खोने के लिए, उसमें केन्द्रित होने के लिए, शांत पहाड़ या पहाड़ की गुफा में चला जाता है। न उसे भूख सताती है और न गर्मी-सर्दी। कहने का तात्पर्य यह है कि पर्वत और पर्वत की गुफायें उसका प्रेरक स्थान हो जाती हैं।

ऋषभ ने जब गृह त्याग किया तो अष्टापद-उभरते हिमालय पर चले गये। विरक्त राम मांगीतुंगी पहाड़ पर चले गये। चन्द्र गुप्त और भद्रबाहु दक्षिण गमन कर चन्द्रगिरि पर्वत पर साधना करने लगे। समस्त तीर्थंकरों ने पर्वतों को ही अपनी अंतिम साधना स्थली बनाया। दक्षिण की गुफा शायिकायें इस बात का प्रमाण हैं कि श्रमण साधु गुफाओं में साधना करना चाहते थे। यहाँ तक कि ज्ञान-विज्ञान में समर्थ हो जाने के बाद भी इन शक्तिशाली व्यक्तियों की विचार-विमर्श सभायें (समवशरण) पर्वतों पर ही होती थीं।

डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन का कथन है 'जैन धर्म की आत्मा उसकी कला में स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित है .... सौन्दर्य बोध से आनंद की सृष्टि होती है, पर उससे कहीं अधिक, संतुलित, सशक्त, उत्प्रेरक और आत्मोत्सर्ग-शांति और ममत्व की भावनाओं को

- उत्तरांचल (१), हरियाणा (१), उत्तर-प्रदेश (१४), व मध्य प्रदेश के (४५) शिल्प- श्रमण चिन्तन को प्राणिमात्र के सह अस्तित्व के प्रतिपादक के रूप मे स्मरण कराता है (दस लाख वर्षों तक).
- राजस्थान (१४), बिहार (२), असम (१), झारखंड (१), उड़िसा (१), गुजरात (३) तथा अन्य तीर्थों का अस्तित्व इस चिंतन के विस्तार को प्रमाणित करता है (बीस लाख वर्षों तक).
- महाराष्ट्र (११), कर्णाटक (८) व तमिलनाडु (२) मे तीसरे प्रवाह का विस्तार हुआ (दस हजार वर्ष)
- सैंधव - हड़प्पा प्रकार की संस्कृति के विनाश के पश्चात राम काल के पश्चात इस चिंतन को मानने वाले क्रमश: सीमित होते चले गये।

चित्र क्रं. १

• ज्ञानोदय फाउन्डेशन, इन्दौर

उभारती है।' कला शब्द बहुआयामी है। ६४ कलाओं के विद्वानों ने 'शिल्प' को एक महत्त्वपूर्ण कला विधा माना है। भौतिक परिवर्तन के साथ 'कला' के चेहरे को कई-कई परिवर्तनों का सामना करना पड़ा। यहाँ हम अपने विचारों को केवल पहाड़ों व गुफाओं में हुए जैन शिल्पों पर केन्द्रित करेंगे।

अपनी आध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए व उन्हें दृश्य रूप देने की पूर्ति करने के लिए जैनावलंबियों ने प्राथमिक रूप से गुफाओं को उचित माना। अन्य धर्मालंबियों ने भी बाद में उस विधा को अपना लिया। भारतीय गुफा शिल्प, विश्व परिदृश्य में अपनी अभिव्यक्ति के कारण एक अलग ही स्थान रखता है। कई विद्वानों ने धरती पर जीवन इस पर अध्ययन किया है। उनके विचारों से हम अवगत होने का प्रयत्न करेंगे।

(अ) रीडर्स डायजेस्ट के अध्ययन के अनुसार (१) योरोप में करीब ईसा से १०,००० वर्ष पूर्व शिकारी उत्तर ब्रिटेन, उत्तर जर्मनी तथा स्केन्डनेविया से निकलकर दक्षिणी भागों में सामूहिक रूप से रहते पाये जाते हैं। आल्पस पर्वत के पास अधिक भूमि मिलने पर वहाँ बस जाते हैं और कुत्तों को पालते मिलते हैं। ६५०० ई.पू. प्राथमिक खेती एवम् मिट्टी के बर्तन के प्रमाण मिलते हैं।

(२) मध्य पूर्व में ई.पू. ११००० में कुत्तों के पालन व ई.पू. ६००० में प्राथमिक खेती के प्रमाण मेडीटरेनियन (भू-मध्य सागर) क्षेत्र में मिलते हैं। ई.पू. ७५०० में भेड़ों व बकरियों का पालन पहाड़ी क्षेत्रों में मिलता है। ई.पू. ७००० में पहली पत्थर की बनी रपट केटलहुयुक में मिलती है। ई.पू. ६५०० में केटलहुयुक में ताम्बे के पिघलाने के प्रमाण मिलते हैं। इसके पूर्व काल में हड़प्पा सभ्यता पल्लवित हो चुकी थी।

(३) अफ्रिका में ई.पू. ८५०० में शिकारी सहारा में एकत्रित होते हैं और उन्होंने पत्थरों में खुदाई कर चित्र बनाये। ई.पू. ७००० में सहारा में मिट्टी के पात्र, ६५०० ई.पू. में पशु पालन व ६००० में खेती के प्रमाण मिलते हैं। पत्थरों में खुदाई के प्रमाण भारत में ४०००० वर्ष पूर्व के हैं।

(४) एशिया में ई.पू. ११००० में विश्व के प्रथम पात्र जापान में मिलते हैं। जापान में ही १०००० ई.पू. शिकारी एकत्रित होते हैं व मछली पालन करते हैं। ७५०० ई.पू. से ६५०० इ.पू. में मेहरगढ़ (पाकिस्तान) में प्रथम खेती के संकेत हैं। ६५०० ई.पू. में चीन में खेती के प्रमाण मिलते हैं। (भारत के संदर्भ में दी ये सूचनायें तथ्यपरक नहीं हैं)

(५) अमेरिका में १०००० ई.पू. मानव साइबेरिया से पहुँचता है। इ.पू. ६००० में दक्षिण-अमेरिका में लोग एकत्रित होते हैं। कुत्तों का पालन होता है। ई.पू. ६५०० में एन्डीज के आसपास खेती के प्रमाण मिलते हैं। भारत में पहला पशु जिसे चित्र में संजोया गया वह वृषभ (बैल) है, श्वान (कुत्ता) नहीं। दोनों ही पशुओं की प्रकृति से विश्व परिचित है।

(ब) इस पुस्तक के अंतर्गत पृष्ठ २१५ पर एक चित्र प्रकाशित किया है जिसके अंत में कहा गया है कि मनुष्य का अस्तित्व २ एम. वाय.ए. (२० लाख वर्ष) से है। यह २० लाख वर्षों का संकेत भारतवर्ष में हुए भौगोलिक परिवर्तनों से जुड़ा लगता है। भारत भूमि जिसे प्रारंभ में जम्बूद्वीप के नाम से पहचाना जाता था वर्तमान वैज्ञानिक अवधारणाओं के प्रकाश में २०-२२ लाख वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया था। ऋषभ पहले शिल्पी थे, जिन्होंने बिखरे मानव समूह को आवश्यकता की पूर्ति का मार्ग बताया, उन्हें केवल प्रकृति पर ही आश्रित न रहकर अपने हाथों-कर्मों पर आधारित जीवन शैली का स्वामी बनाया। राजनीति, अर्थ और धर्म की प्रारंभिक परिभाषाओं को आकार दिया। इतना कर्मण्य जीवन जीने के बाद ऋषभ के मन ने सबको ठुकरा दिया और उभरते हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र में पहुँच गया और अंदर की बातों को समझने का पुरुषार्थ करने लगा। पत्थरों और गुफाओं में अपने मन की शांति को खोजने लगा। ऋषभ तो ऋषभ था- जीवन की धाराओं को समझने वाला शिल्पी। जीवन के विज्ञान का वह वर्तमान युग का पहला प्रवक्ता बन गया। अष्टापद की शांति उसका प्रमुख कारण बन गई और ऋषभ चिंतन की प्रेरक बन गई। शांति के बिना ध्यान नहीं और ध्यान के बिना अंतर्मन पर केन्द्रित होना असंभव है। ऋषभ ने इसी असंभव को संभव बनाया। उस युग में अष्टापद की पथरीली जमीन पर मानवता को वह पुरुषार्थ मार्ग मिला, जो आज भी कोई २२-२३ लाख वर्ष बाद भी, प्रेरक है। जैन साधकों ने अपनी साधना से पहाड़ों को तीर्थ बनाया। मनुष्य कितने भी यज्ञ कर लें, प्रवचन दे दें, अनुष्ठान कर लें, दान दे दें, युद्ध कर लें पर उसके हृदय में शांति और पर्वत दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। और काले-भूरे-सफेद पत्थरों का सीना चीरकर लाई गई गंगा की शीतल धारा ने, ऋषभ के १० लाख वर्ष पश्चात् के गंगावतरण ने, इसे पुष्ट किया। इस प्रवाह ने समस्त मध्य प्रदेश, पूर्वांचल, पश्चिमांचल को सांसारिक कर्मठता व त्याग मार्ग की ओर प्रेरित किया। कई जीवन शैलियों ने विस्तार पाया और ८००० से १००० वर्षों तक की सिंधु (हड़प्पा) सभ्यता ने भौतिक निर्माण और त्यागी परंपरा को संजोया जिसके अवशेष अब सतत मिल रहे हैं। इन संदर्भित क्षेत्रों गिरनार, विंध्याचल, शिखरजी अरावली आदि से प्राप्त पुरावशेषों का अध्ययन, श्रमण चिंतन की विकास धारा को स्पष्ट करता है। राम काल के साथ अर्थात् ८-६ हजार वर्ष से वैचारिक परिवर्तन का अस्तित्व नजर आता है। वैदिक चिंतन ने, श्रमण चिंतन से हटकर अवधारणाओं को आकार दिया। शांत, मौन, चिंतन और एकांतता का स्थान लोगों के समूह, यज्ञ, हवन और ब्राह्मण व ऋषियों के मार्गदर्शन में स्वर्ग की कल्पना ने ले लिया। स्वर्ग में भौतिक सुख अपरम्पार होते हैं, उसने मानव मन को लुभाया। पहाड़ों व गुफाओं से हटकर सपाट मैदानों, नदियों के किनारों और राजमहलों में धर्म के वैदिक केन्द्र बन गये।

श्रमण मार्गी पर्वतों और गुफाओं में रह गये और भोला जन-मानस मैदानों में छद्म त्याग, आडंबर, भोग मार्ग, पारिवारिक कलह, सत्ता की लालसा में फँस गया। अब तक का किसी भी विघटन से दूर भारतवासी विभक्त हो गया। महाभारत व अन्य घटनाओं के साथ विदेशियों का भारत पर आक्रमण इसका परिणाम थे- जिसने पराधीन भारत की नींव डाली। इस विघटन को पार्श्वनाथ व महावीर ने रोकने की भरसक कोशिश की। इस राष्ट्रीय विघटन को श्रमण जैन समाज ने समझा। मैदानी भागों में बाद के बने जैन तीर्थ स्थानों मंदिरों, शिक्षण स्थलों का विकास हुआ। यह इस बात का

ब्राह्मी लीपी के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवशेष : ऐसे अनेक हैं

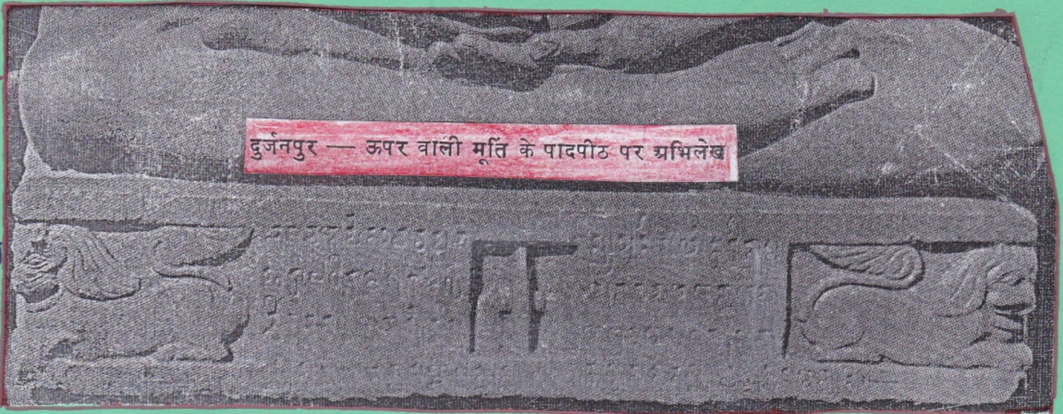

दुर्जनपुर — ऊपर वाली मूर्ति के पादपीठ पर अभिलेख

विदिशा संग्रहालय मे संगृहित इस मूर्ति पर ब्राह्मी लिपी मे अभिलेख है।

निर्माण : रामगुप्त महाराज
प्रेरणा : आचार्य चन्द्र
संभवतः चौथी शताब्दी

मामुलम : ब्राह्मी अभिलेख का एक अंश : ई.पू. द्वितीया प्रथम शताब्दी

पार्वती गुफा पर ब्राह्मी मे अभिलेख. ब्राह्मी अभिलेख अनेकों स्थान पर मिले हैं।

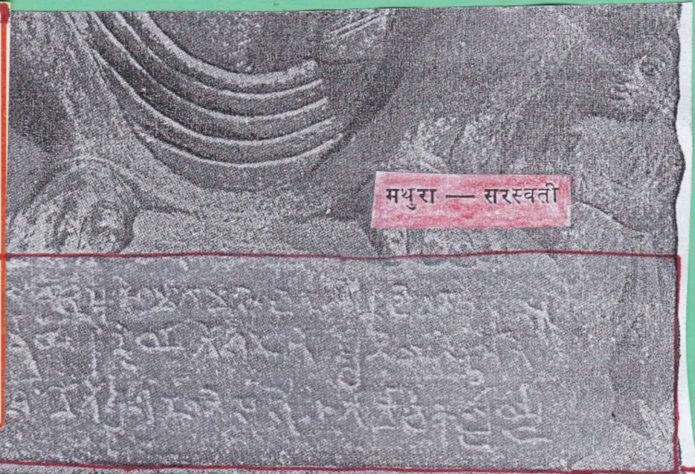

मथुरा — सरस्वती

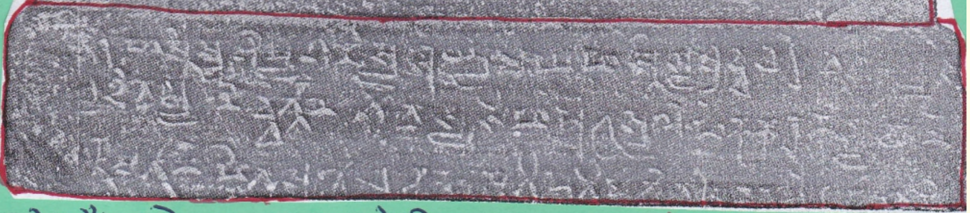

सरस्वती : प्राचीनतम सरस्वती की जैन मूर्ति है। वर्ष ५४ (१३२ ई.) की इस मूर्ति पर एक समर्पणात्मक शिलालेख है। इतने पुरातन काल मे विद्या की देवी सरस्वती की मूर्ति का प्रतिष्ठापन जैन लोगों का विद्या के प्रति समर्पण सूचित करता है।

दोनो ही अवशेषों मे ब्राह्मी लीपी मे अंकन है.

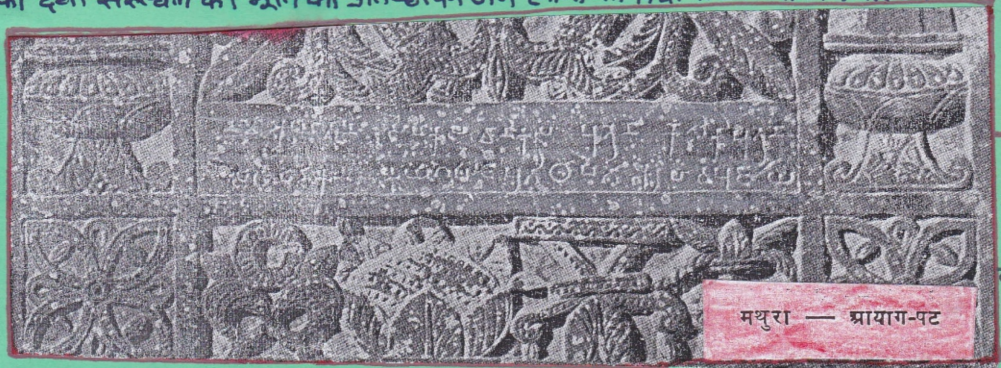

मथुरा — आयाग-पट

ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी

आयाग शब्द रामायण मे प्रयुक्त किया गया है और टीकाकार ने इसकी व्याख्या याजनीय देवता, एक देवता जिसकी पूजा की जाना चाहिए.

एफिग्राफिक इंडिका. 1
बूलर चित्र क्र. 2

ज्ञानोदय फाउन्डेशन, इन्दौर

प्रमाण है कि श्रमण समूह ने साहित्य निर्माण किया व समाज में प्रेम व सह-अस्तित्व की धारा को मजबूत करने का प्रयत्न किया। बुद्ध ने भी अन्य ढंग से इसको रोकने का प्रयत्न किया। पर्वत प्रधान धार्मिक चेतनता को नया प्रवाह महावीर पश्चात् भद्रबाहु और चंद्रगुप्त मौर्य के दक्षिण गमन से मिला। इसका प्रमाण भद्रबाहु की चन्द्रगिरी पर्वत श्रृंखला पर तपस्या के साथ मिलता है। दक्षिण में शैल और शैल गुफाओं में तपस्या करते हुए मुनियों ने श्रमण मार्ग का गहन प्रचार-प्रसार किया। यह मोटा-मोटा जैन इतिहास का भारतवर्ष में अस्तित्व व फैलाव को व्यक्त करने वाली प्रवाह रेखा है। देखें संलग्न चित्र क्रमांक (१)। यहाँ इस सच को नहीं भूलना चाहिए कि श्रमण चिंतन के समर्थक जैनों को धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक आतंक व विघटन का, तृतीय प्रवाह के प्रारंभ से सामना करना पड़ा। यदि ऐसा न हुआ होता तो जैनों की जनसंख्या कम से कम ५० प्रतिशत होती। समस्याओं को द्वेष नहीं, सही परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। प्रांतों की सीमा रेखा में जो अंक दिये गये हैं वे उस क्षेत्र में ज्ञात शैल-गुफा हैं जो जैन संदर्भों से अलंकृत हैं।

इतिहासकार श्री जी.जवाहरलाल ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ४३ पर स्पष्ट किया है कि जैन धर्म ने भारतीय सभ्यता के विकास में अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया। जैनों ने दार्शनिक मार्गदर्शकों का कार्य किया, स्व, स्वीकृति करने वाले, शिक्षक, सलाहकार, कला को प्रेरित करने वाले की भूमिका निभाई। साहित्य का निर्माण किया तथा समाज के सभी लोगों के बीच प्रेम को बढ़ाया। अतः यह कहना ठीक नहीं है कि, जैन लोगों की धार्मिक क्रियाओं से असंबंधित थे वरन, ऐसा प्रतीत होता है कि वे केवल वनों से जुड़े नहीं थे वरन् उन्होंने धार्मिक कार्यों का नेतृत्व किया और राजाओं के मार्गदर्शक रहे।

इसी क्रम में यह भी विचारणीय है कि भारत की ज्ञात मूल भाषा ब्राह्मी है। संस्कृत भी ब्राह्मी भाषा से उत्पन्न हुई। विकास होना चाहिए और वह हुआ पर इसका तात्पर्य यह नहीं होना चाहिए कि ब्राह्मी की अनदेखी कर दी जाये। संस्कृत के नाम पर इसकी अनदेखी कर दी गई। इसे स्मरण रखने के लिए चित्र क्रमांक-२ प्रस्तुत है जिसमें ब्राह्मी लिपि के अवशेष प्रस्तुत किए गए हैं। ब्राह्मी लिपि के प्रति समर्पण जैन इतिहास प्रदर्शित करता है।

श्रमण चिन्तन के अवशेष, जिसमें ब्राह्मी लिपि के अभिलेख हैं, इतिहास को उजागर करते हैं।

पर्वत, गुफा शिल्प व ब्राह्मी अवशेष श्रमण परंपरा को प्रथम भारतीय सांस्कृतिक परंपरा बनाते हैं।

यदि जैन चिंतन न होता, स्याद्वाद का सिद्धांत प्रतिपादित न होता तो भारत की दार्शनिक पीठिका क्या होती? बहुत से भयभीत करने वाले प्रश्न सामने खड़े नजर आते हैं। भारतवर्ष भाग्यशाली है कि वह सोचता है-करता है-विरोधियों को जन्म देता है किन्तु उनके समाधान की क्षमता भी रखता है।

-ज्ञानोदय फाउण्डेशन, ६/२, स्नेहलतागंज, इन्दौर (म.प्र.)
मोबाइल : 09685991565

सराहनीय योगदान

दिनांक २१ मई २०२० को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय पदाधिकारियों की एक आनलाइन जूम मींटिग राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जैन सेठी की अध्यक्षता में सम्पन्नहुयी। इस मींटिग में श्री महिपाल पहाड़िया, अध्यक्ष, सदस्यता विकास उपसमिति, श्री एम.के. जैन, कार्याध्यक्ष, श्री धर्मचंद जैन पहाड़िया, कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जैन सेठी राष्ट्रीय महामंत्री तीर्थ संरक्षिणी महासभा श्री प्रकाशचंद बड़जात्या, राष्ट्रीय महामंत्री, महासभा, श्री कमल कुमार जैन रांवका, वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री, श्री अशोक कुमार जैन सेठी, कार्याध्यक्ष, साउथ कर्नाटक, बंगलौर, श्री तेज कुमार जी वैद, इंदौर, मंत्री, श्री शैलेन्द्र जैन, पुरातत्व संयोजक, लखनऊ श्री सुमित जैन, दिल्ली आदि उपस्थित थे। इस मीटिंग में श्री धर्मचंद जैन पहाड़िया, कार्याध्यक्ष ने गुल्लक योजना के अर्न्तगत समाज में ५० हजार गुल्लकें वितरित कराये जाने की बात कही जिसे उपस्थित सभी केन्द्रीय पदाधिकारियों ने इसे सहर्ष स्वीकार कर अपना पूर्ण समर्थन दिया। आपके इस सराहनीय प्रस्ताव की सभी पदाधिकारियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस कार्य के लिये महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी ने आपको **''राष्ट्रीय गुल्लक योजना प्रमुख''** के पद पर नियुक्त किया। आपने इस पद को सहर्ष स्वीकार किया जिसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपसे निवेदन है कि पूरे भारतवर्ष में गुल्लकों का वितरण होना आवश्यक है हम आशा करते हैं कि **इस कार्य को शीघ्रताशीघ्र इसी वर्ष कराने की कृपा करें। हमारी शुभकामनायें आपके साथ हैं।** आपसे पूर्ण अपेक्षा है कि आप अपने कार्य में सफल हो ताकि प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो सके।

-कमल कुमार जैन रांवका, वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री

पाकिस्तान के जैन मंदिर की प्रतिमायें- कुछ जैन मंदिर जालंधर कैंट फिरोजपुर कैंट व कुछ चंडीगढ़ में शोभित हैं।

दिगम्बर जैन नसियाँ कीर्तिस्तंभ आमेर एक लेख

❑ महेन्द्र कुमार पाटनी

आमेर से बाहर की ओर लगभग २ किलोमीटर दक्षिण की ओर खोर दरवाजा के पास यह नसियाँ स्थित है। इस नसियाँ का क्षेत्रफल ५ बीघा १४ बिस्वा है। नसियाँ के इस मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान् विमलनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन सं. १६४२ की तथा इसके अतिरिक्त अन्य प्राचीन प्रतिमाएँ सं. १५२६, १६५०, १६५१ व १५५६ की भी विराजमान हैं।

नसियाँ परिसर के मुख्यद्वार से करीब ५० मीटर चलकर पश्चिम की ओर देखते हुए मंदिर की सीढ़ियाँ आती हैं। १५ सीढ़ी चढ़कर बांयी तरफ कीर्तिस्तंभ का कक्ष है और दांयी तरफ मंदिर है। मंदिरजी में संगमरमर की एक सुन्दर वेदी बनी हुई है, जिसमें भगवान् विमलनाथ की प्रतिमा अन्य प्रतिमाओं के साथ विराजमान है। मंदिरजी पर गुम्बज भी बना हुआ है।

यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यहाँ का कीर्तिस्तंभ है, जिसके नाम से यह नसियाँ प्रसिद्ध है। यह स्तम्भ साढ़े १२ फीट ऊँचा है तथा इसकी गोलाई ४ फीट ७ इंच है। स्तंभ मकराने का है। इस स्तंभ के १० भाग किये गये हैं। एक-एक भाग में चारों ओर भट्टारकों की १२-१२ मूर्तियाँ खड्गासन/पद्मासन उत्कीर्ण हैं। इसमें खड्गासन मूर्तियों के हाथ में कमंडलु है। यह स्तम्भ मंदिर के ठीक सामने चबूतरे पर गुम्बज के नीचे ढका हुआ है। इसमें सम्वत् ४ से अर्थात् भ. भद्रबाहु से लेकर संवत् १८८३ में होने वाले भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति तक १०१ भट्टारकों की मूर्तियों के संवतोल्लेख हैं एवं ९वें भाग के सात कोष्ठक के आगे कोष्ठक खाली है। यह एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कीर्ति स्तंभ है जिसमें मूलसंघ के दिगम्बर आम्नाय के भट्टारकों का विवरण है।

नसियाँ के अहाते में चार चरण छत्रियाँ हैं, जिनमें भट्टारकों की चरण पादुकाएँ स्थापित हैं। प्रथम छत्री में भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति ने अपने गुरु भ. देवेन्द्र कीर्ति की पादुका द्वितीय श्रावण सुदी ६ को आमेर में महाराजा जयसिंह के शासनकाल में स्थापित की।

दूसरी चरण छत्री में भट्टारक जगत कीर्तिजी ने अपने दादा गुरु भ. नरेन्द्र कीर्तिजी की जिनका स्वर्गवास अंबावती (आमेर) में श्रावण कृष्णा अष्टमी सं. १७२२ को प्रातः हुआ, चरण पादुका स्थापित की।

तीसरी चरण छत्री में लिखा है कि श्रावण सुदी ५ सं. १७३३ के प्रातः भट्टारक जगत कीर्तिजी को पद देने के पश्चात् भ. सुरेन्द्र कीर्तिजी का स्वर्गवास हुआ।

चौथी चरण छत्री में उल्लेख है कि संवत् १७७० की माघ बदी ५ को भट्टारक जगत कीर्तिजी का स्वर्गवास हुआ तथा माघ बदी ११ के बाद ही पद दिया गया। इसके पश्चात् १७७१ को मंगसिर सुदी अष्टमी को भ. देवेन्द्र कीर्तिजी ने जगत कीर्तिजी की चरण पादुका स्थापित की।

इस नसियाँ के बाहरी परिदृश्य धार्मिक पर्यटन की वृद्धि के लिए भारत सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा भगवान् महावीर के २६००वें जन्मोत्सव वर्ष में प्रदत्त राशि से भी कई विकास कार्य करवाये गये हैं। इसमें ७५'x४०' का एक बहुत बड़ा हाल तथा चार कमरे मय लेट्रीन बाथ, बरामदों का जीर्णोद्धार करवाया गया है तथा नया बरामदा बनवाया गया है। इनके अतिरिक्त नसियाँ के चारों तरफ पक्की दीवार बनवाई गई है। परिसर में बहुत सुन्दर साउण्ड प्रूफ हॉल, जिसमें मंच, कुर्सियाँ, पंखे, माईक सिस्टम आदि उपलब्ध हैं, बनवाया गया है। पाँच बड़े सुन्दर कमरे यात्रियों के ठहरने के लिए बनवाये गये हैं। दो रसोईघर हैं, जिनमें गोठ करने वालों के लिए बर्तन आदि उपलब्ध हैं। पूजा-प्रक्षाल करने वालों के लिए पर्याप्त संख्या में धोती-दुपट्टे उपलब्ध हैं। चार कमरों में गीजर, डबलबेड व टॉयलेट की पूरी व्यवस्था है। मंदिर के बाहर परिसर में बहुत बड़ा लॉन लगा हुआ है। परिसर के उत्तरी भाग में २४ तीर्थंकरों के ज्ञान कल्याणक वृक्ष लगवाये गये हैं। परिसर में नींबू, बील, आँवला, अर्जुन, नीम, शीशम, जामुन, अशोक, बेर आदि के पेड़ लगे हुए हैं। परिसर में एक विशाल कुँआ है, जिसकी जगत पर संगमरमर जड़ा हुआ है।

यह नसियाँ दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमिनाथजी (सॉवलाजी) आमेर के प्रन्यास के अन्तर्गत पंजीकृत है तथा प्रबन्ध सोसाइटीज एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा किया जाता है। राजकीय प्राचीन रिकार्ड से पता चलता है कि जब यहाँ किसी भट्टारक का नाम स्तम्भ पर अंकित कराया जाता था तो समारोहपूर्वक पूजन आदि का विधान होता था तथा जयपुर महाराजा की ओर से भेंट आती थी। इससे इस स्तंभ की ऐतिहासिकता तथा मान्यता का महत्त्व सिद्ध होता है।

आमेर की ओर से तथा जयपुर-दिल्ली बाईपास से इस नसियाँ में जाने के दोनों तरफ मार्ग हैं, जो सड़क से जुड़े हुए हैं तथा मार्गदर्शक चिह्न भी लगाये गये हैं।

-मानद मंत्री, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी,
नारायणसिंह सर्किल, टोंक रोड, जयपुर (राज.)

बिजवाड जिला देवास की तीर्थंकर प्रतिमा

❑ **नरेश कुमार पाठक**

बिजवाड मध्य प्रदेश के मालवा अंचल के देवास जिला की कन्नौद तहसील में स्थित है। देवास से बिजवाड़ जाने के लिए नेवरी तथा चापड़ा होते हुए जाना पड़ता है। वर्तमान में बिजवाड़ छोटा सा ग्राम है। यहाँ परमारकालीन एक जैन मंदिर है। जैन मंदिर ग्राम के उत्तर में एक पहाड़ी पर स्थित है। इस समय यह ध्वस्त हो चुका है। इसके अवशेष स्थल पर पड़े हैं जिसमें अधिष्ठान संघाटों के खण्ड शुकनासिका जो एक चैत्य गवाक्ष से अलंकृत है जिसके अन्दर कलश बीजपूरक है। मंदिर के अंदर कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा खड़ी है। अतः स्पष्ट होता है, कि यहाँ एक भव्य मंदिर था, इसका भू-विन्यास एवं गर्भगृह, अन्तराल पार्श्व कक्षों से युक्त सभा मण्डप तथा अर्द्धमण्डप से विनिर्मित था। भू-विन्यास नेमावर के सिद्धनाथ मंदिर के समान प्रतीत होता है। यह मंदिर सफेद बलुआ पत्थर पर बना है। इसका मुख उत्तर की ओर यहाँ से प्राप्त तीर्थंकर एवं दो श्रुतदेवी की प्रतिमाएँ केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर में सुरक्षित हैं। बिजवाड़ से प्राप्त तीर्थंकर प्रतिमा जैन संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन में सुरक्षित है, जिसका प्रकाशन डॉ. रमेश चन्द्र यादव डॉ. अरविन्द कुमार जैन द्वारा अपनी पुस्तक जैन संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन बड़नगर २०१५ में पृष्ठ १११ में चित्र सहित प्रकाशित किया गया है, प्रतिमा का विवरण इस प्रकार है-

यह किसी बड़ी प्रतिमा का भाग है जिसमें दोनों ओर दो-दो पांच बन्धन युक्त स्तंभ गवाक्ष में कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर खड़े हैं। (स.क्र.८६) गवाक्ष में तीर्थंकर के सिर के दोनों ओर अशोक वृक्ष की पत्तियाँ नीचे दोनों ओर पद्‌म बने हुये हैं। सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप व वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न दृष्टव्य है। उदर पर तीन बलयकृति इस प्रतिमा पर विशिष्ट शिल्पांकन है। यह कटिवस्त्र की सिलवटें भी हो सकती हैं। अतः यह प्रतिमा दीक्षा पूर्व तीर्थंकर की हो सकती है। दायें पार्श्व में चंवरधारी द्विभंग मुद्रा में खड़ा है। दायां हाथ टूटा है, जो दायें पैर जंघा पर होगा क्योंकि पैर की जंघा पर हाथ का पञ्जा शेष है। बायें हाथ में चंवर लिये है। करण्ड मुकुट, चक्रकुण्डल, बलय मुक्ताहार, मेखला धारण किये है। चंवरधारी के ऊपर उड़ते हुये मालाधारी गन्धर्व का अंकन है। चेहरा खण्डित है, गले में माला धारण किये है। पादपीठ पर तीन कीर्तिमुख अंकित है। जो उभरे नेत्र ऊपर सींग एवं मुख खुला है। वेसाल्ट पत्थर पर निर्मित ५२X३५X२६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। यह प्रतिमा बिजवाड की जैन कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

-२४, रामानुज नगर, रामवाटिका के पीछे,
गोविन्दपुरी के सामने, सिटी सेन्टर, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल : 08223915111

देवनल्ली, निकट हिरेगुट्टी, ता. होन्नावर, जिला-उत्तर कन्नड़

कंकाली के पुरातत्व में अंकित विदेशी जैन श्राविकाएँ

❑ डॉ. संगीता सिंह

छठी शताब्दी ई.पू. न केवल भारतवर्ष के लिए वरन् समस्त विश्व के लिए बौद्धिक एवं धार्मिक क्रान्ति का युग रहा है। मानव की जिज्ञासा एवं तर्कशीलता ने नवीन विचारों को जन्म दिया। यह वह युग था जब यूरोप के साथ-साथ भारत में भी लोग प्राचीन व्यवस्था की प्रामाणिकता, धार्मिक क्रिया-विधियों, पुरोहितों की असीमित शक्ति और सुविधाओं तथा मरणासन्न संस्कृति के प्राणघातक भार के विरुद्ध थे।

छठी शताब्दी ई.पू. में जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म ने तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति एवं कला को प्रभावित किया। छठी शताब्दी ई.पू. में महावीर स्वामी ने जैन धर्म को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाया। महावीर स्वामी जैन धर्म के अन्तिम तीर्थंकर थे। छठी शताब्दी ई.पू. में सम्पूर्ण भारतवर्ष षोड्श महाजनपदों में विभक्त था जिनमें से एक शूरसेन जनपद भी था, जिसकी राजधानी मथुरा थी।[१] शूरसेन जनपद यमुना नदी के किनारे स्थित था। शूरसेन जनपद की राजधानी मथुरा वैदिक, बौद्ध एवं जैन धर्म की प्रमुख स्थली रही है। भगवान् कृष्ण की जन्मस्थली के रूप में भी मथुरा विश्वविख्यात है।

वर्तमान समय में मथुरा आगरा खण्ड के अन्तर्गत उत्तरी पश्चिमी सीमा पर स्थित है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के तट पर २७°३१' उत्तर अक्षांश तथा ७७°१४' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। मथुरा का पूर्वी भाग पंजाब की सीमा से मिलता है। इसकी दक्षिणी सीमा पर आगरा, पश्चिमी सीमा पर स्वतन्त्र रूप से भरतपुर स्थित है।[२]

मथुरा की प्रमुख नदी यमुना है जिसे ऋग्वेद में भी उल्लिखित किया गया है, जिसे सूर्यतनया कहा गया है। मथुरा में वन एवं टीले अधिक हैं।[३] कंकाली टीला मथुरा नगर के दक्षिण-पश्चिम में भूतेश्वर क्रॉसिंग एवं बी.एस.ए. कालेज के मध्य में स्थित है। यह प्रमुख पुरातात्त्विक स्थल है। कंकाली के उत्खनन से जैन एवं बौद्ध धर्म की असंख्य पुरानिधियाँ विभिन्न संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही हैं।

दुर्गा जी का एक रूप कंकाली भी है। अतः हिन्दू देवी कंकाली जी का मंदिर यहाँ पर स्थापित होने के कारण इसे कंकाली टीले के रूप में ख्याति मिली है। कंकाली टीले को ''जैनी टीला''[४] भी कहा जाता है क्योंकि इस स्थान से असंख्य जैन कलाकृतियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

यह संरक्षित क्षेत्र है।[५] डॉ. स्मिथ[६] ने कंकाली क्षेत्र को १५०००

सेमी. लम्बा तथा ५५०० सेमी. चौड़ा बताया है परन्तु कनिंघम महोदय[७] ने १२००० सेमी. लम्बा तथा ८८०० सेमी. चौड़ा बताया परन्तु कनिंघम महोदय[८] ने १२००० सेमी. लम्बा तथा ८८०० सेमी. चौड़ा बताया है।

समय-समय पर इस टीले का उत्खनन कार्य होता रहा है। इन उत्खननों में विशाल मात्रा में जैन तीर्थंकर की मूर्तियाँ, आयागपट्ट, स्तम्भ शीर्ष, वेदिका-स्तम्भ, उष्णीष, तोरण-खण्ड, तोरण-शीर्ष, अभिलिखित चरण, चौकी एवं अन्य कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।

सन् १८७१ ई. मार्च और नवम्बर माह में **'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया'** के डायरेक्टर जनरल **ए० कनिंघम**[६] ने सर्वप्रथम कंकाली टीले के पूर्वी भाग का उत्खनन कार्य करवाया तथा उन्होंने पुनः १८८१, १८८२, १८८३ ई. में भी उत्खनन कार्य किया[१०] जिससे अधिकांशतः जैन सामग्री मिली।

१८७१ से १८७७ ई. के मध्य ग्राउस महोदय ने उत्खनन कार्य किया और अनेक कलाकृतियाँ प्रकाश में आईं।[११] १८८८ से १८९१ ई. के मध्य **फ्यूरर** महोदय को कंकाली के उत्खनन कार्य में ईंटों के एक जैन मन्दिर के अवशेष तथा अन्य पुरावशेष प्राप्त करने में सफलता मिली जो जैन धर्म एवं स्थापत्यकला के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी के स्रोत हैं।[१२]

ब्यूहलर महोदय[१३]का महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि कंकाली से प्राप्त अभिलेखों को एक प्रमुख पुस्तक में लिपिबद्ध किया है। ये सभी अभिलेख १५० ई.पू. से १०२३ ई. के हैं और पुरातत्त्व की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। कंकाली टीले से केवल जैन धर्म से सम्बन्धित पुरावशेष उपलब्ध हुए हैं।

कंकाली टीले से उत्खनित सामग्री राजकीय संग्रहालय मथुरा, राज्य संग्रहालय लखनऊ में संग्रहीत है। इन कलाकृतियों में तीर्थंकरों के जन्म कल्याण की गाथाएँ उत्कीर्ण हैं। इनके अतिरिक्त जैन मस्तक भी हैं।[१४]

ज्ञात साक्ष्यों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि कंकाली टीले पर जैन प्रतिष्ठान एक ऐसे स्तूप के चारों ओर स्थापित किया गया था जिसे अत्यन्त श्रद्धा से देखा जाता था। एक शिलालेख में जो कि एक प्रतिमा के पादपृष्ठ[१५] भाग पर उत्कीर्ण है तथाकथित देव निर्मित 'बोदव स्तूप' पर अर्हत नन्द्यावर्त प्रतिमा के प्रतिष्ठापित किये जाने का वर्णन है।[१६]

बृहत्कल्पभाष्य[१७] में वर्णित है कि जिस प्रकार धर्मचक्र के लिए उत्तरापथ और जीवन्त स्वामी की प्रतिमा के कारण कौशल की ख्याति है, इसी प्रकार देव निर्मित स्तूप से कंकाली टीला प्रसिद्ध है। कालान्तर में लोग स्तूप के निर्माण की वास्तुकला भूल गए और इसे देवनिर्मित मानने लगे। सोमदेव के यशस्तिलक चम्पू में भी इसका उल्लेख मिलता है।

सोमदेव के अनुसार बज्रकुमार ने इसे निर्मित करवाया, जिसके पास विद्याधरों की अलौकिक शक्तियाँ थीं।[१८] क्षेत्र से प्राप्त कलाकृतियों में उत्कीर्ण स्तूप आकृतियाँ मिली हैं जो मथुरा[१९], लखनऊ[२०], दिल्ली[२१] के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। यह स्तूप पार्श्वनाथ को समर्पित है, सुपार्श्वनाथ को नहीं।[२२] जिनप्रभसूरि के अनुसार स्तूप के सामने की आकृति पार्श्वनाथ की है।[२३] मथुरा कला शैली के अन्तर्गत निर्मित कंकाली टीले से जैन तीर्थंकर की प्रतिमाएँ दो प्रकार की प्राप्त हुई हैं। ध्यानभाव में पद्मासनासीन अथवा कायोत्सर्ग मुद्रा तथा कायोत्सर्ग मुद्रा में ही सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएँ। कंकाली टीले से प्राप्त कलाकृतियाँ कुषाणकालीन हैं।[२४]

जैन तीर्थंकरों के अतिरिक्त जैन देवी जैसे जैन सरस्वती[२५] की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो कुषाण युग की है। कंकाली टीले से प्राप्त आयागपट्ट से तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक दशा का बोध होता है। अष्टमांगलिक प्रतीकों का अंकन सुन्दर रूप से दृष्टव्य है। तीर्थंकरों के लांछन से उन्हें पहचानने में सुविधा होती है। कुषाणकालीन प्रतिमाएँ विशेष महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इन पर लेख उत्कीर्ण है।

मथुरा कलाशैली के अन्तर्गत निर्मित प्रतिमाएँ श्रावस्ती, प्रयाग, सारनाथ आदि स्थानों को चौथी शती. ई. तक भेजी जाती थीं। मथुरा कला शैली के कलाकार काशी एवं सारनाथ आदि के शिल्पकारों को प्रेरणा प्रदान करते थे।[२६]

लखनऊ संग्रहालय में एक चरण चौकी सुरक्षित है[२७]जिस पर कुषाण ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। लेख की दूसरी पंक्ति को सर्वप्रथम स्मिथ ने ''नन्दि' (अ) वर्तस'' प्रतिमा पढ़ा था। बाद में प्रो. के.डी. बाजपेयी ने अरहतो मुनिसुवृतस प्रतिमा[२८] अर्थात् अर्हन्त मुनि सुव्रत पढ़ा था।[२९] मूल प्रतिमा तो उपलब्ध नहीं है केवल पादपीठिका ही उत्खनन में प्राप्त हुई थी। इस चरण चौकी पर मध्य में त्रिरत्न[३०] अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान व चरित्र का प्रतीक चिह्न बना है। त्रिरत्न में नीचे चक्र, अगल-बगल शंख, ऊपर नन्दीपट तत्पश्चात् चक्र बना है। इसके बांयी ओर लम्बे आकार की तीन महिलाएँ साड़ी पहने हुए हैं किन्तु तीनों ही एक हाथ से साड़ी सम्भालते हुए हैं। तीनों स्त्रियों ने बायें हाथ में मोटी माला, जिसके पुष्पगुच्छ ऊपर को उठे हैं पकड़े खड़ी हैं। तदनन्तर एक छोटे आकार की सेविका हाथ जोड़े खड़ी है। इसी के बगल में बांयी ओर मुँह घुमाए सिंहासन का बचा हुआ सिंह बैठा है। इसके मुख पर स्वस्तिक का रेखांकन है। त्रिरत्न के दायीं ओर अर्द्धफलक साधु ही बचा है।

त्रिरत्न चिह्न के दांयी ओर खड़ी तीनों स्त्रियाँ लम्बी स्वस्थ एवं तीखे नाक-नक्श वाली हैं। इनकी ऐसी आकृतियाँ गान्धार शैली की प्रतिमाओं में दृष्टिगोचर हैं। जैन प्रतिमाओं की अन्य चौकियों पर जो श्राविकाएँ और साध्वियाँ अंकित हैं, वे इनसे छोटी आकार की हैं। वेदिका स्तम्भों पर भी ऐसी शारीरिक सौष्ठव सम्पन्न आकृतियाँ दृष्टिगोचर नहीं हैं। इसी कारण इन्हें विदेशी स्त्रियों का अंकन अभिहित किया गया है। इन विदेशी स्त्रियों की जैन धर्म के प्रति श्रद्धा रही होगी तभी विदेशी महिलाएँ अर्हन्त पूजन में भारत आयीं। ऐसी आकृतियाँ संग्रह में गान्धार प्रतिमाओं के अलावा किसी अन्य मूर्तियों में नहीं मिलती हैं। मुनि सुव्रत की इस चौकी पर सं. ४८+७८=१२७ ई. का लेख है और यह कंकाली टीला मथुरा से प्राप्त हुई थी। मुनि सुव्रत की चरण चौकी की जैन आर्ट ऑव इण्डिया प्रदर्शनी में लास एंजिल, क्लीवलैण्ड, लन्दन में लग चुकी

है।[31] जैन लेखों में अकका, ओघा, ओखरिका और अझटिका जैसे स्त्री नाम विदेशी मूल के प्रतीत होते हैं।[32]

निष्कर्षतः

यह ज्ञात होता है कि जैन धर्म की पूजा अर्चना के लिए विदेशी स्त्रियाँ भारत आती थीं। उपर्युक्त जैन फलक से स्पष्ट होता है कि जैन धर्म का प्रचार-प्रसार भारत के साथ-साथ विदेशों में भी होता रहा विदेशी श्रावक-श्राविकाएँ भारत आकर जैन धर्म की पूजा-अर्चना करती रहती थीं और जैन धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रखती थीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. महापुराण, पर्व १६, श्लोक १५५, **२.** बाजपेयी, कृष्णदत्त; भारत के सांस्कृतिक केन्द्र मथुरा, पृ. १०८, **३.** ऋग्वेद, १०-७५, **४.** स्मिथ, वी.ए., जैन स्तूप एण्ड अदर एण्टिक्वीटीज ऑव मथुरा, पृ. १, एफ.एस. ग्राउस, मथुरा-ए डिस्ट्रिक्ट मेमोआर पृ.११७, **५.** विज्ञप्ति संख्या ७०६ एम.एस./११० एम.एस. १६२७, **६.** स्मिथ, पूर्वोक्त, पृ.। **७.** आर्कियोलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग-३, पृ. १६, **८.** एफ.आर. आलुचिन; दि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव हिस्टॉरिक साउथ एशिया, दि इमरजेन्सी ऑव साइट्स एण्ड स्ट्रेटस, पृ.५, **६.** आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, वार्षिक रिपोर्ट, भाग-३ पृ.१३, भाग १७, पृ.१११, भाग-२०, पृ.३, **१०.** ग्राउस एफ.एस. मथुरा-ए डिस्ट्रिक्ट मेमोआर, १६११, **११.** एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-१ पृ. २६२, मथुरा इन्स्क्रिप्शन्स, पृ.४०, **१२.** एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-१, पृ. ३७१, ३६३, ३६७, **१३.** श्री निवासन, डी.एम. मथुरा दि कल्चरल हेरिटेज, पृ. ३३२, **१४.** ल्यूडर्स लिस्ट ऑव ब्राह्मी इन्स्क्रिप्शन्स, क्रमांक ४७, **१५.** हण्डीकी, के.के.; यशस्तिलक एण्ड इण्डियन कल्चर पृ. ४१६, **१६.** ५/१५३६, **१७.** घोष, अमलानन्द, कला एवं स्थापत्य, ख-१ पृ. ५५, **१८.** स्मिथ, वी.ए.; पूर्वोक्त, चित्र ३, **१६.** राजकीय संग्रहालय मथुरा, सं. क्यू. २, **२०.** राज्य संग्रहालय लखनऊ सं. ३३५, ६८३, २०७, **२१.** राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली, जे. ५५५, **२२.** शाह, यू.पी., स्टडीज इन जैन आर्ट, पृ.१२, **२३.** विविध तीर्थकल्प, पृ.१७, **२४.** जैन, ज्योतिप्रसाद, उत्तर प्रदेश और जैन धर्म, पृ.१२०, २१, **२५.** राज्य संग्रहालय लखनऊ सं.जे. २४, **२६.** मजूमदार, आर.सी., दि क्लैसिकल एज, पृ. ५२३, **२७.** राज्य संग्रहालय लखनऊ, सं. जे. २०, आकृति ४८.५६७ सेमी., **२८.** स्मिथ, बी.ए., जैन स्तूप, प्लेट ६, पृ. १२-१६ एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द ६ पृ. २४४.४८, **२६.** पहले, अर्हत नद्यावर्त पढ़ा गया था जिसे प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी ने मुनिसुव्रत' पढ़ा जो शुद्ध है। महावीर कम्मेमोरेशन, भाग-१ पृ. १८६-६० आगरा एवं वॉयस ऑव अंहिसा, एटा, १६५८, **३०.** ''सम्युग्दर्शन-बोध-वृत्तमलं रत्न त्रयपावन'' मंगलाष्टकम्, श्री स्रोत संग्रह पृ. १, कलकत्ता, **३१.** रस्तोगी, शैलेन्द्र कुमार, लखनऊ संग्रहालय की जैन प्रतिमाएँ, पृ.१२, लखनऊ, २००२, **३२.** एपिग्राफिया इण्डिका, ख.१, पृ. ३७०-६७, ख.२, पृ. १६४-२१२

प्रवक्ता-प्राचीन इतिहास विभाग,
ग्राम्यांचल महिला विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)
मोबाइल : 08787056544

शिलाहारकालीन अष्टपूजेसाठी दानलेख...

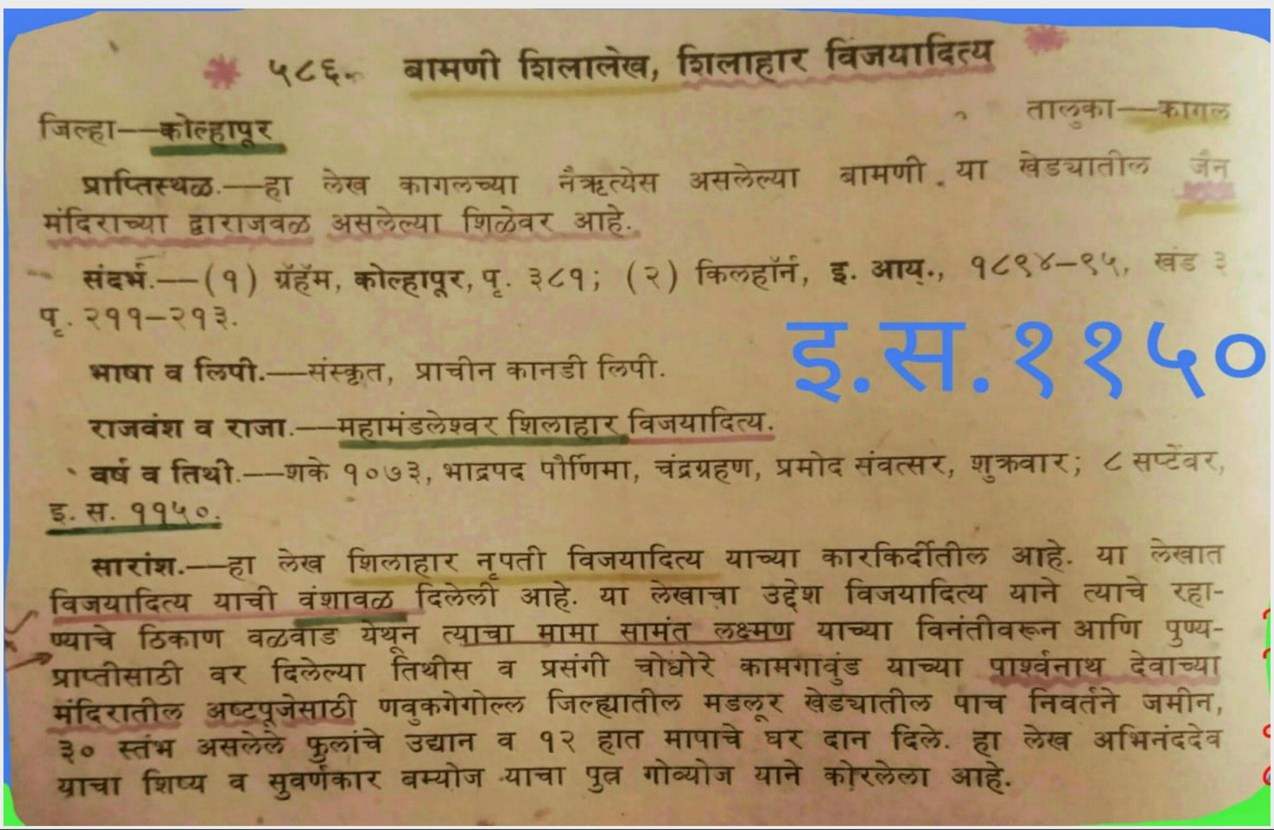

५८६. **बामणी शिलालेख, शिलाहार विजयादित्य**

जिल्हा—**कोल्हापूर** तालुका—कागल

प्राप्तिस्थळ.—हा लेख कागलच्या नैऋत्येस असलेल्या बामणी या खेड्यातील जैन मंदिराच्या द्वाराजवळ असलेल्या शिळेवर आहे.

संदर्भ.—(१) ग्रॅहॅम, **कोल्हापूर**, पृ. ३८१; (२) किलहॉर्न, **इ. आय.**, १८९४–९५, खंड ३ पृ. २११–२१३.

भाषा व लिपी.—संस्कृत, प्राचीन कानडी लिपी.

राजवंश व राजा.—महामंडलेश्वर शिलाहार विजयादित्य.

वर्ष व तिथी.—शके १०७३, भाद्रपद पौर्णिमा, चंद्रग्रहण, प्रमोद संवत्सर, शुक्रवार; ८ सप्टेंबर, इ. स. ११५०.

सारांश.—हा लेख शिलाहार नृपती विजयादित्य याच्या कारकिर्दीतील आहे. या लेखात विजयादित्य याची वंशावळ दिलेली आहे. या लेखाचा उद्देश विजयादित्य याने त्याचे रहाण्याचे ठिकाण वळवाड येथून त्याचा मामा सामंत लक्ष्मण याच्या विनंतीवरून आणि पुण्यप्राप्तीसाठी वर दिलेल्या तिथीस व प्रसंगी चोधोरे कामगावुंड याच्या पार्श्वनाथ देवाच्या मंदिरातील अष्टपूजेसाठी णवुकगेगोल्ल जिल्ह्यातील मडलूर खेड्यातील पाच निवर्तने जमीन, ३० स्तंभ असलेले फुलांचे उद्यान व १२ हात मापाचे घर दान दिले. हा लेख अभिनंददेव याचा शिष्य व सुवर्णकार बम्योज याचा पुत्र गोव्योज याने कोरलेला आहे.

गंधर्वपुरी (सोनकच्छ), म.प्र.: छठी से 17वीं शताब्दी की जैन प्रतिमाएँ तथा मंदिर

❑ मनीष जैन

गंधर्वपुरी ग्राम इंदौर-भोपाल मार्ग पर सोनकच्छ नगर से उत्तर में करीब ६ किलोमीटर दूरी पर पक्की सड़क से जुड़ा हुआ छोटी-छोटी विन्ध्याचल की पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। इसके पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियाँ हैं, पूर्व की ओर सोमवती नदी तो पश्चिम में १.५ किलोमीटर की दूरी पर कालीसिंध नदी बहती है। यह ग्राम पहले एक बड़ा नगर हुआ करता था और चम्पावती, गंधावल, गंधर्वपुरी इत्यादि नामों से समय-समय पर विख्यात रहा है। गंधर्वपुरी में पुरातत्त्व, इतिहास, ग्राम्य जीवन और मालवी संस्कृति की सुवास है।

क्षेत्र की पुरा सम्पदा और महत्त्व- गंधर्वपुरी एक प्राचीन ऐतिहासिक और कलापूर्ण दि. जैन तीर्थ है। यहाँ से अनेकों जैन प्रतिमाएँ और अवशेष प्राप्त हुए हैं जो छठी सदी (गुप्तकाल) से लेकर १७वीं सदी तक की हैं। यहाँ १९६६ में पुरातत्त्व विभाग की ओर से एक संग्रहालय का निर्माण किया गया, जिसमें सैकड़ों (३०० से भी अधिक) जैन, वैष्णव धर्म की मूर्तियाँ संग्रहीत हैं। वैसे भी गाँव में यत्र-तत्र मूर्तियाँ बिखरी पड़ी हुई हैं, प्रत्येक मकान के दासों में मूर्तियाँ लगी हैं। कई प्राचीन जैन मंदिरों के अवशेष तो जमीन में ही दबे पड़े हैं, जिन पर लोगों ने अपने घर बना लिए हैं। कुछ जगह मकान की नींव खोदने पर बड़े-बड़े पत्थर के बने कमरे एवं सीढ़ियाँ मिली हैं जिसे जैन मंदिर का ही भाग माना जाता है। ज्ञात होता है कि गाँव में जो हरिजन मोहल्ला नाले के किनारे स्थित है वहाँ एक जैन मंदिर था, जिसके अवशेष वहाँ आज भी विद्यमान हैं। इस मंदिर के कुछ अवशेष गाँव के एक मकान में लगे हैं।

यहाँ एक १७वीं सदी का छोटा सा जिनालय अवश्य मौजूद है जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है। यहाँ जो मूर्ति पार्श्वनाथ भगवान् की है बहुत ही चैतन्य एवं चमत्कारी है। ग्राम में जगह-जगह से प्राप्त अधिकांश प्रतिमाएँ और अवशेष यहाँ के संग्रहालय में प्रदर्शित हैं तो कुछ यहाँ के छोटे से जिनालय में विराजमान हैं। यहाँ

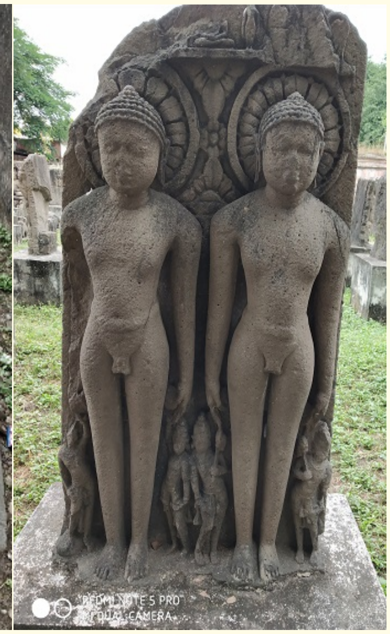

आज भी जिस जगह पर भी खुदाई होती है वहाँ से मूर्ति निकलती है। यहाँ की अनेक अच्छी एवं आकर्षक मूर्तियाँ भोपाल, देवास एवं दिल्ली संग्रहालयों में ले जाई गई हैं। स्थानीय निवासी बताते हैं कि यहाँ ग्राम से सैकड़ों मूर्तियाँ लापता हो गई हैं।

संग्रहालय में अन्य प्रतिमाओं के साथ जैन तीर्थंकर की दो विशाल प्रतिमाएँ हैं, जो संग्रहालय में ही मुख्य द्वार के पास खुले तल में जमीन पर लेटा रखी हैं। इनमें एक मूर्ति श्री शांतिनाथ तीर्थंकर की है इसकी लम्बाई करीब १७ फीट एवं चौड़ाई करीब ४.५ फीट है तथा दूसरी मूर्ति १२ फीट ऊँची और ४ फीट चौड़ी है जो कि नाले के पास वाले प्राचीन जैन मंदिर के खंडहरों से प्राप्त हुई है। इस गाँव के नीचे एक प्राचीन नगरी दबी हुई है। यहाँ हजारों मूर्तियाँ हैं। गंधर्वपुरी के संग्रहालय में पद्मासन में जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की प्रस्तर प्रतिमा, खड्गासन में शांतिनाथ जी, महावीर स्वामी जी का पद्मकमल से अलंकृत मनोहारी प्रभामण्डल, कुन्तल केशराशि और सीने पर श्रीवत्स अत्यंत प्रभावकारी है। अम्बिका देवी द्विभंग मुद्रा में, सप्तफणी नाग के नीचे पार्श्वनाथ जी, जैन तीर्थंकर, कल्प वृक्ष के नीचे खड़ी जैन यक्षिणी का माधुर्य, बीस भुजाओं वाली चक्रेश्वरी देवी का द्विभंगी मुद्रा में लालित्य उस काल के शिल्प सौष्ठव की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

क्षेत्र का इतिहास– गंधर्वपुरी बहुत ही प्राचीन नगरी है। इसका नाम पहले चंपावती था। चंपावती यहाँ की राजकुमारी थी जिसके पुत्र गंधर्वसेन के नाम पर बाद में गंधर्वपुरी हो गया। आज भी इसका नाम गंधर्वपुरी है। राजा गंधर्वसेन जिन्हें गर्दभिल्ल और कहीं महेन्द्रादित्य भी पुकारा गया। शकों से पराजय के उपरांत भौगोलिक दृष्टि से संरक्षित गंधावल (गंधर्वपुरी) जो कि राजा गंधर्वसेन का ननिहाल भी था को राजा गंधर्वसेन ने संकट काल के लिए उपयुक्त जाना और उज्जैन से यहाँ पलायन किया और इसे अपनी तात्कालिक राजधानी बनाई। गंधर्वी विद्या का ज्ञाता होने के कारण ही उन्हें गर्दभिल्ल नाम से जाना गया। उनकी सभा में गायकों का प्राचुर्य था। गर्दभी विद्या में भी संगीत का तीसरा ग स्वर गर्दभ का माना गया है अनुमान है कि गंधर्वसेन अथवा गर्दभिल्ल ही उसके विशेषज्ञ थे। कालिदास ने एक गंधर्व आयुध का उल्लेख किया है जिससे जीव हिंसा किये बिना ही विजय सुनिश्चित की जा सकती थी। न चारिहिंसा विजयश्च हस्ते (रघुवंश सर्ग पांच)। गंधर्वसेन द्वारा भी गर्दभी ध्वनि से अहिंसा द्वारा शत्रु को परास्त करने का सूत्रपात करने की कथा मिलती है। गंधर्व सेन ५० वर्ष राजा के पद पर आसीन रहे। उनके पुत्र के राज्याभिषेक के बाद उन्होंने वन में जाकर दीक्षा ले ली ऐसा भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग नामक चतुर्थखण्ड में कलयुग राजवर्णन नामक उपाख्यान में उल्लेख मिलता है। इन सबसे सिद्ध होता है कि गंधर्वसेन के जीवन में जैन धर्म की शिक्षाओं ने गहरा प्रभाव जमाया था और यही कारण है कि यहाँ जैन संस्कृति खूब फली-फूली। कालांतर में यहाँ अनेकों जिन मंदिरों का निर्माण हुआ और सहस्राधिक जैन प्रतिमाएँ उनमें विराजमान की गयीं।

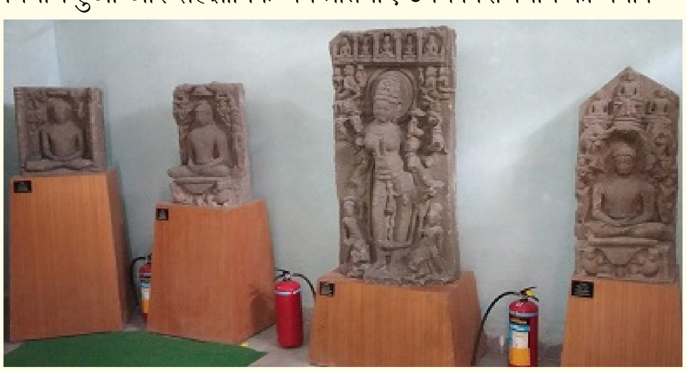

गंधर्वसेन के बाद उनके पुत्र विक्रमादित्य सिंहासनारूढ़ हुए जिन्होंने गंधर्वपुरी से ही शक्ति संचित कर शक, हूण, कम्बोज, पवन और तुषारों को पराजित कर विशाल राज्य की स्थापना की तथा भगवान् महावीर के निर्वाण के ४७० वर्ष पश्चात् ५७ ईसवी पूर्व नवीन विक्रम संवत् का सूत्रपात किया। ईसवी की पहली शताब्दी के सातवाहन, आठवीं शती के अभिलेखों, दसवीं शती के जैन साहित्य ने भी विक्रमादित्य और उनके पिता गंधर्वसेन की महत्ता को साक्ष्यांकित किया है। जैन पट्टावलियों में महावीर निर्वाण के ४७० वर्ष होने पर विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय स्वरूप विक्रम संवत् प्रारंभ करने का वर्णन मिलता है। कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने भी काठ की तलवार से और भ्रूभंग (भौहों के इशारे से) शत्रु पर विजय पायी थी। सिंहासन बत्तीसी में 'अहिंसक विजय' की चर्चा मिलती है।

गंधर्वपुरी की प्राचीन जैन प्रतिमाएँ एवं अवशेषों को देखकर लगता है कि कई सदियों तक यह एक बहुत बड़ा नगर एवं व्यापारिक केन्द्र रहा होगा। यहाँ पर अनेक जैन मंदिर थे, साथ ही जैन परिवार की बाहुल्यता भी थी। ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि यहाँ पर भगवान् महावीर रुके थे। यह बात १३वीं शताब्दी में लिखी गई जैनधर्म की पुस्तक कालकाचार्य कथानक से भी प्राप्त होती है। कालिदास के प्रसिद्ध ग्रंथ मेघदूत में भी उज्जैन के पूर्व में स्थित गंधर्वपुरी का उल्लेख किया गया है।

गंधर्वपुरी का उल्लेख गंधावल के नाम से प्राचीन जैन स्मारक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी में मुद्रित सन् १९१४ में सरस्वती लायब्रेरी खण्डवा पुस्तक में किया गया है, जिसमें इसका प्राचीन नाम चम्पावती है एवं यहाँ से २ मील दूर पर्वत पर एवं ग्राम में भी जैन मंदिर के खंडहर का उल्लेख है। डॉ. कैलाशनाथ काटजू जो कि गृहमंत्री थे, तब वे यहाँ आये थे। उन्हें इस गाँव में प्राचीन मूर्तियाँ देखकर बेहद लगाव हो गया था, बाद में जब वे प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तब उन्होंने इसे सड़क से इंदौर-भोपाल मार्ग से जुड़वाया एवं पुरातत्त्व संग्रहालय की स्थापना करवाई। साथ ही इसका नाम गंधावल से गंधर्वपुरी करवाया।

वर्तमान स्थिति– यहाँ पर अनेक जैन मंदिर थे, साथ ही जैन परिवार की बाहुल्यता भी थी। वर्तमान में जैनियों के मात्र ४ परिवार ही रह गये हैं। यहाँ के जैनवासियों को गर्व है कि हम एक प्राचीन जैन

धरोहर के बीच में उस गाँव में रह रहे हैं, किन्तु यहाँ जैन समाज विस्तृत नहीं होने के कारण एवं पूर्णरूप से आर्थिक कमी के कारण इस धरोहर के विकास में अड़चन आ रही है। यहाँ एक १७वीं सदी का छोटा सा जिनालय अवश्य मौजूद है जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

हमारा कर्तव्य- इस तीर्थ को विकास की आवश्यकता है। इसकी रक्षा और विकास करना समस्त धर्मानुरागियों का पावन कर्तव्य है। यह तीर्थ जैन संस्कृति के अतीत की बहुमूल्य धरोहर है। आइये, आप और हम जो कुछ भी कर सकते हैं इस जैन पुरा-संपदा को बचाने के लिए, हम करें। सबसे पहले तो इस स्थल का अधिकाधिक भ्रमण करें, पुरातत्त्व विभाग से मिलकर या अनुमति लेकर पुरा-महत्त्व की प्राचीन जैन प्रतिमाओं को जैन समाज को सौंपने का दबाव बनायें ताकि आसपास या उसी स्थल पर उनकी विधिवत् स्थापना करके प्राचीन प्रतिमाओं की सुरक्षा तथा सम्मान सुनिश्चित किया जा सके। ताकि क्षेत्र के समृद्ध जैन इतिहास और उसके गौरव को पुनः स्थापित किया जा सके।

-उदयपुर (राज.)
मोबाइल : 09461872124

ईडरगढ़ में नवीन संत भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस दौरान 1500 साल पुराने मंदिर में भगवान के परिकर का पृष्ठ भाग तथा कुछ अवशेष मिले हैं

श्रुत पंचमी आज : शास्त्र ज्ञान के बिना सत्यार्थ-बोध नहीं हो सकता : आचार्य श्री विशुद्धसागर जी

वैशाली (विश्व परिवार)। आचार्य दिगम्बराचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने कहा कि वस्तु के वस्तुत्व का सत्यार्थ-बोध-श्रुत के द्वारा ही सम्भव है। साहित्य के बिना सनातन-सत्य का निर्णय नहीं हो सकता, स्मृति, प्रतिविज्ञान, तर्क, अनुमान, आगम के भेद से परोक्ष प्रमाण पांच प्रकार का है, प्रमाण-नयात्मक वस्तु है, प्रमाण एवं नये से ही पदार्थों को सम्यग्ज्ञान होता है। उन्होंने कहा कि सामान्यतः से मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय केवलज्ञान के भेद से प्रमाण पांच प्रकार का है, यही सम्यक ज्ञान है, जो भी लोक में पदार्थों का बोध होता है वह ज्ञान से ही होता है, बाकी जो भी लोक में दृष्टिगोचर हो रहा है, वह ज्ञान नहीं श्रेय है, प्रमाण नहीं प्रमेय है, जाननहारा तो मात्र ज्ञान ही है, शब्द भी संवेदन-शून्य ज्ञेय है, ज्ञान का बाहृय निमित्त अवश्य बनता है, परन्तु शब्द ज्ञान नहीं होता, आत्मज्ञान का साधन श्रुतज्ञान है। उन्होंने कहा कि आत्म-ब्रम्ह का उद्घाटक शब्द-ब्रम्ह है और शब्द-ब्रम्ह ही आगम प्रमाण है, सम्प्रति काल में वस्तु के सूक्ष्म निर्णय के लिए आगम प्रमाण ही है, शास्त्र-ज्ञान के बिना सत्यार्थ-बोध नहीं हो सकता, आगम में वर्णित सिद्धान्त त्रैकालिक-सनातन है, जो आप्त द्वारा कथित, कुमार्ग को खण्डित करने वाला सुमार्ग को मण्डित करने वाला, परस्पर विरोध दोष रहित तथा सम्यक-तत्व का उपदेशक है, यही सच्चा आगम है। उन्होंने कहा कि मूलतः यह वर्तमान अपेक्षा तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी द्वारा उपदिष्ट है, भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोपरांत तीन अनुबद्ध केवली हुए, गौतम स्वामी, जम्बू स्वामी सुधर्माचार्य इनके उपरांत कैवल्य-परम्परा भारत में विराम हो गई, सत्यार्थ बोध दर्शक, मात्र श्रुत केवली बचे, श्रुत-केवलियों में अन्तिम श्रुत-केवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी हुए, फिर धीरे-धीरे ज्ञान-शक्ति, क्षयोपशम कम-कम होता गया। उन्होंने कहा कि श्रुतधर आचार्यों में गुजरात में गिरनार पर्वत पर चन्द्र गुफा में आचार्य धरसेन स्वामी विराजे थे। अन्तिम श्रुतधर आचार्य के रूप में उनकी वृद्धावस्था थी, उन्होंने विचार किया हमारी समाधि होते ही श्रुत का लोप हो जाएगा, इसलिए उन्होंने दक्षिण-प्रान्त में वेणु नदी के तट पर वनवास देश में अस्द्बिली आचार्य के चरण-सानिध्य में भति-सम्मेलन में पत्र भेजा तथा श्रुत-रक्षार्थ युगल-मुनिराज बुलवाए। पुष्पदंत एवं भूतबलि नामक मुनिराज धरसेन स्वामी के श्री चरणों में उपस्थित हुए, तब आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से मंगल-ध्वनि हुई श्रुत देवता जयवंत हो। उन्होंने कहा कि दोनों मुनिराजों की परीक्षाकर योग्य काल में सिद्धांत सूत्रों का गंभीर ज्ञान कराया और उन्हें बिहार करने का आदेश कर दिया, पुष्पदंत स्वामी ने सत्-प्ररूपणा ग्रंथ लिखा, शेष ग्रंथ भूतबली स्वामी ने पूर्ण किए, छह अधिकारों में सिद्धांत ग्रंथ पूर्ण हुए, इसलिए उनका नाम षट्-खण्डागम सिद्धांत-शास्त्र रखा गया, अंकलेश्वर में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को ग्रंथ का लेखन पूर्ण हुआ था, वहाँ के नरेश ने ग्रंथराज को गजराज पर विराजमान कर नगर में भव्य जिनवाणी की शोभा-यात्रा निकालकर महामहोत्सव मनाया था, तभी से सम्पूर्ण राष्ट्र में श्रुत-पंचमी पर्व प्रारंभ हो गया, नगर-नगर में जिनवाणी की आराधना का पर्व प्रारम्भ हुआ। उन्होंने कहा कि प्रज्ञ-जनों को शास्त्रों की जल से, तेल से, शिथिल बंधन से तथा अज्ञानीजनों से रक्षा करना चाहिए, अध्ययनशील, त्यागी-व्रतियों एवं अन्य शास्त्र भेंट करना चाहिए, जीर्ण ग्रंथों को सुरक्षित कर उनका संरक्षण नवीन ग्रंथों का प्रकाशन कराकर अज्ञान-तम का उपशमन करना चाहिए, क्योंकि विनय पूर्वक की गई श्रुत-आराधना कैवल्य-ज्ञान को प्रदान करने वाली है, इसलिए सदा श्रुत-संवेगी भाव में लीन रहना चाहिए।

-सौरभ जैन, विदिशा

अतिशय क्षेत्र कम्पिला जी मंदिर प्रांगण में खुदाई से जैन प्राचीन धरोहर प्राप्त

हडवल्ली (कर्नाटक) एक संक्षिप्त परिचय

हडवल्ली उत्तरी कर्नाटक जिले में भटकल तालुक से १६ किमी. दूर स्थित है। पहले यहाँ १८ बसदि हुआ करते थे। अब ६ बसदि है। हडवल्ली का पहला नाम संगीतपुर था। यह सालू राजा का राजधानी था। उसके बाद ये चेनबैरादेवी की भी राजधानी हुआ करता था। बिलगी में मिले दो शिलालेखों में एक मठ का उल्लेख है। पर अभी गांव में वर्तमान में कोई मठ नहीं है। यहाँ दो पहाड़ हैं एक चंद्रगिरि और इन्द्रगिरि, चन्द्रगिरि पहाड़ में चंद्रनाथ बसदि स्थित है। इन्द्रगिरी पहाड़ में मंदिर का अवशेष और क्षेत्रपाल हैं। मध्ययुग में हडवल्ली अकलंक मठ के नाम से प्रसिद्ध था। कुंदकुंदाचार्य गुरुओं के बाद, चारुकीर्ति पंडित देवा, १श्रुतकीर्ति, २विजया कीर्ति, उसके बाद अकलंका चंद्रप्रभा, अलंकार परंपरा के ३ विजयाकीर्ति, २ अकलंक, भट्टाकलंका, इन मुनि परंपरा हड्वली में था। हडवल्ली में अब तक ३१ शिलालेख मिले हैं। इनमें से शासन, निशिदिगल, विरागल्लू और महासाथी शिलालेख मिला है।

चंद्रगिरि पहाड़ के चंद्रनाथ बसदि- हडवल्ली के गांव से २ किमी. दूरी में एक पहाड़ है। वह एक बसदि है बसदि चंद्रनाथ भगवान को

समर्पित है। चंद्रनाथ बसदि का विस्तीर्ण १७.२०X७.६५ मीटर है। चंद्रनाथ बसदि में गर्भगृह है पर अभी कोई जैन प्रतिमा नहीं है। मंदिर के अंदर सभामंडप और अर्धामंडप है। सभा मंडप में चार स्तंभ है जिन्हें बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया है। मंदिर के मुख्यद्वार में द्वारपालक हैं। बसदि के बाहर ही २४ स्तंभ है। हर स्तंभ के ऊपर के भाग में तीर्थंकर को खड्गासन मुद्रा में उत्कीर्ण किया है और नीचे के भाग में तीर्थकंर का चिन्ह है। मंदिर टूटा हुआ है जल्द ही इसका जीर्णोद्धार करना जरूरी है।

इन्द्रगिरि पहाड़- इन्द्रगिरी पहाड़ में मंदिर का अवशेष है। एक शिला शासन और एक पादुका भी है।

पार्श्वनाथ बसदि– पार्श्वनाथ बसदि उत्तर की ओर है और सिस्ट पत्थर से बना हुआ है। बसदि का विस्तीर्ण ६.५५X६.२० मीटर है। बसदि

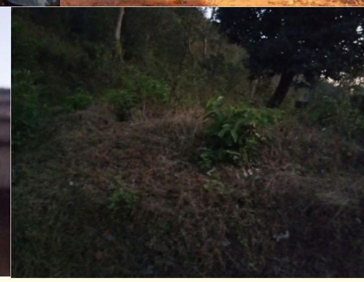

में गर्भगृह, उपमंडप और प्रदक्षिणा पथ है। मंदिर की बाहरी में दोनों ओर ६ स्तम्भ हैं। ऊपर का भाग सिस्ट पत्थर से बना है।

२४ तीर्थंकर बसदि– इस बसदि का हाल ही में नवीनीकरण किया गया है। बसदि का विस्तीर्ण १२.७५X७.२० मीटर है। बसदि के अंदर २४

तीर्थंकर की खड्गासन प्रतिमा आयताकार आकार में स्थापित है। तीर्थंकर की मूर्ति के दोनों ओर यक्ष और यक्षिणी की प्रतिमा है और नीचे लांछन बना हुआ है। यहां माँ पदमावती की दो प्रतिमायें स्थिति है और माँ सरस्वती और अन्य प्रतिमायें है। इस बसदि में अनेक पंचधातु की बहुत ही प्रतिमा है। यहाँ पर त्रिकाल तीर्थंकर की पंचधातु की प्रतिमा को बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया है।

चंद्रनाथ बसदि– यह बसदि चौबीसो भगवान के मंदिर प्रांगण में है। गर्भगृह में भगवान चंद्रनाथ की खड्गासन सफेद पत्थर की प्रतिमा है। इस

मंदिर का जीर्णोद्धार का काम चल रहा है।

नेमिनाथ बसदि– यह बसदि चंद्रनाथ बसदि के बगल में है। बसदि का विस्तीर्ण ८.७०X४.२० मीटर है। इस बसदि को लेटराइट पत्थर से बनाया है। इस बसदि में नेमिनाथ भगवान और पार्श्वनाथ भगवान की खड्गासन मुद्रा की प्रतिमा विराजमान है।

महावीर बसदि– यह बसदि चंद्रनाथ बसदि के परिसर में स्थित है। इस बसदि का विस्तीर्ण ६.५५X७.८५ मीटर है। यह बसदि लैटराइट के पत्थर से बनी है। बसदि के आंतरिक भाग में एक अर्धमंडप है। गर्भगृह में महावीर और ब्रम्हा यक्ष की मूर्ति है।

चंद्रनाथ बसदि– यह बसदि हडवल्ली गांव के पूर्वाभिमुख है। बसदि का विस्तीर्ण १८.५५X५.४० मीटर है। इस बसदि में गर्भगृह, सभामंडप, बाहरी मंडप है। गर्भगृह में भगवान चंद्रनाथ की खड्गासन प्रतिमा बहुत ही मनोहारक है। सभामंडप में ४ स्तम्भ है, चारों स्तम्भ एक ही जैसे हैं।

चंद्रनाथ बसदि– बसदि का विस्तीर्ण १६.७५X५.२० मीटर है। अब इस बसदि का सिर्फ फॉउंडेशन है। बसदि के जीर्णोद्धार के लिये फंड की कमी है। चंद्रनाथ बसदि के परिसर के दाईं ओर वीरा मस्तीगुड़ी है। स्थानीय लोग उसे वीरमस्थी मंदिर भी कहते हैं।

दंतु का मानस्तम्भ– शिला मानस्तंभ हर जगह कर्नाटक में देखने को मिलता है। पर हडवल्ली में दंतु मानस्तंभ भी था। अब ये मानस्तंभ २ भाग में बंटा हुआ है। मानस्तंभ का उपर का भाग कर्नाटक विश्वविद्यालय, कन्नड़ संशोधन के म्यूजियम में रखा हुआ है और नीचे का भाग धर्मस्थल के मंजूषा म्यूजियम में है।

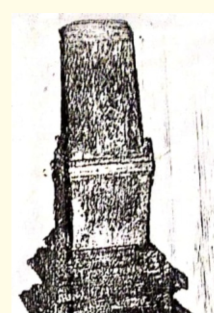

–स्पूर्ति जैन

सूर्य पहाड़

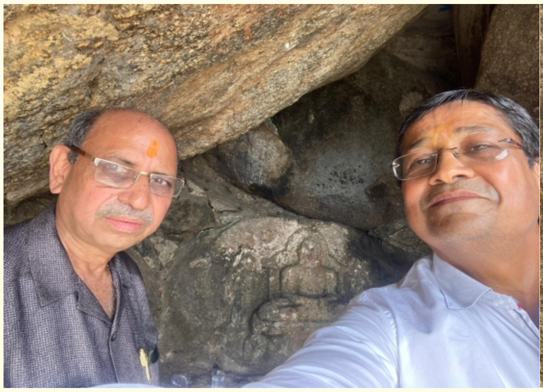

आसाम नागालैण्ड अरुणाचल डिब्रूगढ़ जैसे प्रदेश में खंडेलवाल सरावगी जैन को व्यापार के लिए गये लगभग १५० वर्ष ही हुए हैं इससे पहले वहाँ स्थानीय लोग ही रहते थे। हमें पता चला कि सूर्य पहाड़ आसाम गौहाटी से दो घन्टे की यात्रा पर है। वहाँ पहाड़ी पर लगभग ३५० सीढ़ी चढ़ने पर चट्टानों पर हजारों साल पुरानी भगवान् की मूर्ति उकेरी गयी है व पहाड़ी के सबसे ऊपर श्रवणबेलगोला चंद्रगिरी पहाड़ी पर भद्रबाहु महाराज ने जहाँ तप किया वैसी पत्थर की एक चट्टान के नीचे भगवान् आदिनाथ की मूर्ति बनी है व एक चट्टान पर चरण भी बने हुए हैं जिसके फोटो हैं इसके साथ डाल रहा हूँ। इसका सन् १६७२ में जैन समाज को मालूम पड़ा व आसाम के पुरातत्त्व विभाग में जैन समाज को पता चलने से पहले जैन साईट का उल्लेख है इससे पता चलता है कि जैन मुनि वहाँ तपस्या करते होंगे व जैन धर्म वहाँ सदियों पुराना होगा। आज वहाँ पहाड़ी के नीचे आदिनाथ भरत जी व बाहुबली की मूर्ति व चौबीस भगवान् की प्रतिमा व ठहरने की व्यवस्था स्थानीय समाज ने ४० साल पहले की है। आर्यिका इंदुमति व सुपार्श्वमति माताजी व कई मुनि वहाँ दर्शन करने गये हैं जो भी जैन भाई गौहाटी शिलांग या घूमने जायें उन्हें इन पवित्र जगह पर दर्शन करने जरूर जाना चाहिए। मेरे साथ महिपाल जी पहाड़िया जालंधर, अनिल जी भोपाल, अनिल जी चेन्नई व शेखर जी पाटनी किशनगढ़ जैन गजट थे।

आवश्यक सूचना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा किये जा रहे प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य हेतु/प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार पत्रिका की सदस्यता हेतु/गुल्लक योजना के अंतर्गत बहुत से दातारों ने धनराशि तीर्थ संरक्षिणी महासभा के खाते में आनलाइन जमा करवायी है परन्तु धनराशि जमा कराये जाने की सूचना प्राप्त न होने के कारण उनकी धनराशि SUSPENCE A/C में लिखी हुयी है। SUSPENCE A/C में लिखी हुयी धनराशि का विवरण दिया जा रहा है दातारों से अनुरोध है कि यदि उनके द्वारा भेजी गयी धनराशि की रसीद अभी तक उनको प्राप्त नहीं हुयी है तो कृपया शीघ्रताशीघ्र बैंक स्लिप की छायाप्रति नाम-पते के साथ कार्यालय के पते पर भेजकर दूरभाष नं **0522-2662581** तथा **WHATSAPP 09129065900** पर यथाशीघ्र सूचित करने की कृपा करें ताकि रसीद बनाकर भेजी जा सके।

04.04.2019	5,000.00	23.07.2019	5,000.00	27.11.2019	800.00
13.04.2019	5,100.00	24.07.2019	5,000.00	04.12.2019	3,000.00
20.04.2019	600.00	31.07.2019	11,000.00	07.12.2019	1,100.00
28.04.2019	501.00	06.09.2019	1,100.00	13.12.2019	3,100.00
29.04.2019	5,000.00	13.09.2019	10,500.00	21.12.2019	3,000.00
06.05.2019	3,500.00	23.09.2019	1,000.00	03.01.2020	4,380.00
08.05.2019	500.00	27.09.2019	1,500.00	04.01.2020	1,000.00
18.05.2019	1,100.00	11.10.2019	2,501.00	09.01.2020	7,565.00
27.05.2019	1,100.00	15.10.2019	5,000.00	16.01.2020	1,500.00
02.06.2019	1,100.00	18.10.2019	2,500.00	20.01.2020	4,100.00
13.06.2019	2,500.00	02.11.2019	10,200.00	25.02.2020	1,202.36
28.06.2019	500.00	07.11.2019	1,900.00	07.03.2020	11,000.00
12.07.2019	5,100.00	19.11.2019	2,500.00	08.03.2020	1,000.00
16.07.2019	5,100.00	25.11.2019	7,000.00		

एल्लोरा में जैन संस्कृति की विशालता

छोटा कैलाश (गुफा सं. ३०) -चित्र क्र(१)

चित्र क्र (२) गुफा संख्या ३२ पार्श्वनाथ एवं बाहुबली की खड्गासन एवं पद्मासित महावीर स्वामी की प्रतिमा

गासन एवं पद्मासित महावीर स्वामी की प्रतिमा

इन्द्र सभा गुफा संख्या ३३ तीर्थंकरों की मूर्तियाँ चित्र

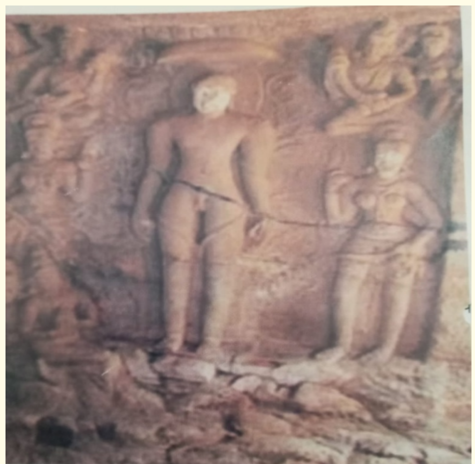

बाहुबली, गुफा संख्या ३० चित्र क्र(४)

भारतीय संस्कृति का डंका सारी दुनिया में सदा से ही बजता रहा है। समय-समय पर धर्म और अध्यात्म के अद्‌भुत संगम ने भारत की संस्कृति दसों दिशाओं में फहराई है। इस आस्थावान देश में अहिंसा, मित्रता, प्रेम, सौहार्द का कभी कोई अभाव नहीं रहा है। हमारी सामाजिक परंपराओं में हमारी संस्कृति को नया आयाम दिया गया है, ज्यो भारतीय संस्कृति की विशालता का परिचय करा देती है। महाराष्ट्र प्रांत के ऐतिहासिक शहर औरंगाबाद से ३० किलोमीटर दूरी पर एलोरा ग्राम है। जहां पर विश्वविख्यात ३४ गुफाएं चंद्रकार पहाड़ी मे उत्कीर्ण हुई है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य नयन मनोहर, अनुपम एवं आनन्द प्रदान करता है। यह गुफाएँ कलचुरी, वाकाटक, चालुक्य, राष्ट्रकूट एवं देवगिरि के यादवों के संरक्षण मे ६ठी से १३वीं शताब्दी मे उत्कीर्ण हुई है। जिनमें राष्ट्रकूट के समय का निर्माण सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिखाई देता है। यहां सभी प्रमुख भारतीय धर्म बौद्ध, वैदिक (शैव पन्थीय ब्राहमींन) हिंदू एवं जैनों का त्रिवेणी संगम ज्यो भारतीय संस्कृति के विशालता का परिचय है। १ से १२ गुफा बौद्ध धर्म की है, हिंदू ब्राह्मण धर्म की गुफाएं १३ से २८ तक है और उसके बाद २९ से ३४ तक जैन गुफाएं है। जो धर्म के कारण दर्शकों को एवं शोधकर्ताओं को तुलनात्मक विवेचन का स्पष्ट आधार मिल जाता है। जैन गुफाओं का चित्रांकन एवं निर्माण ९वीं से ११वीं शती के मध्य हुआ है। यह कलावशेष दिगंबर परंपरा से संबंधित है। इन गुफाओं मे छोटा कैलाश (३०) चित्र क्र (१), इंद्रसभा चित्र क्र (३) (३२) जगन्नाथ सभा (३३) आदि नामों से जानी जाती है। जो स्थापत्य और मूर्ति शिल्प की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गोमटेश देव नामक गुफा में ईसवी सन ११५६का एक शिलालेख भी दृष्टिगोचर होता है। इन चार गुफाओं में जैन मूर्तियों का अनमोल भंडार है। मूर्तियां शिल्प कला की दृष्टि से अति सुंदर तो हैं ही लेकिन तीर्थंकरों की आध्यात्मिक ऊंचाइयां दर्शाने वाले चिन्हों का स्पष्ट तथा प्रभावशाली अंकन यहां पर है। इन गुफाओं में अति सुंदर प्रभामंडल, लांछन, विशाल एवं अलंकृत धर्म चक्र तथा शासन देवी-देवताओं का भी स्पष्ट अंकन है जो यहाँ की विशेषताएं है। इंद्रसभा के अंबिका की भव्य प्रतिमा जो बरबस आकृष्ट करती है। इसके अतिरिक्त पारसनाथ, बाहुबली चित्र क्र (४), महावीर आदि जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं अति सुंदर उत्कीर्ण की गई है यहां पर भित्ति चित्र के माध्यम से भी प्राचीन जैन इतिहास को दर्शाया गया है। इंद्रसभा ९वी एवं १०वीं शताब्दी की है, यहाँ मूर्तियां बनाने वाले ब्रह्मचारी गौर नाग वर्मा का नाम भी अंकित है। प्राप्त अभिलेखों के

माध्यम से पता चलता है कि राष्ट्रकूट के बाद एलोरा की गुफाओं के निर्माण में देवगिरी के यादवो ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिनके कार्यकाल में जैन गुफाएं अधिकांश खुदाई गई है। इन गुफाओं की प्रमुख विशेषताएं हैं यहां जैन चक्रेश्वरी, अंबिका एवं पद्मावती तथा कुबेर यक्ष की स्वतंत्र एवं जीन संयुक्त मूर्तियां उत्कीर्ण है। चक्रेश्वरी की चार, आठ और बारह हाथों वाली कुल ४ मूर्तियां गुफा संख्या ३० और ३२ में दिखाई देती है। चित्र (क्र.२)। पारसनाथ की पद्मावती यक्षिणी की केवल एक स्वतंत्र मूर्ति मिलती है, जो गुफा संख्या ३२ में है। कुक्कुट सर्प वाहन वाली अष्टभुजा यक्षिणी के अवशिष्ट करो में पदम, मसल, खड़ग, खेटक व धनुष्य भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। इन गुफाओं मे पारसनाथ एवं बाहुबली मूर्तियों में क्रमश पद्मावती एवं विद्याधारियों के निरूपण में वस्त्र आभूषणों एवं केश सज्जा का वैविध्य ध्यातव्य है। साथ ही अंबिका यक्षी, आलिगंनबद्ध स्त्री-पुरुष युगलों एवं चामरधारी सेवकों के अंकन में भी वस्त्र आभूषण विविधता पूर्ण एवं चित्ताकर्षक है। एलोरा की जैन गुफा संख्या ३० में शिव की नरेश मूर्तियों के समान कुछ नृत्यरत मूर्तियां भी उकेरी है। इन गुफाओं में कायोत्सर्ग मूर्तियों में पार्श्वनाथ की तपस्या में उपस्थित किये गए तरह-तरह के उपसर्ग कैवल्य प्राप्ति के पहले के दर्शाये गये।

एलोरा की इन गुफाओं में जैनों के सर्वोच्च आराध्य देव प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ, १६वें शांतिनाथ, २३वें श्री पार्श्वनाथ एवं २४वे भगवान महावीर की सर्वाधिक मूर्तियां हैं। इसके साथ ही भगवान ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली गोमटेश्वर, यक्ष, और यक्षिणी की पर्याप्त आकृतियां भी मिलती हैं। यहाँ भगवान बाहुबली की १७ मूर्तियां हैं, एक स्थान पर २४ तीर्थंकरों का सामूहिक अंकन भी उत्कीर्ण है। बाहुबली मूर्तियों के शरीर से लिपटी माधवी एवं सर्प, छिपकली, मृग जैसे जीव जंतुओं का शरीर पर विचरण करते हुए अंकन हुआ है चित्र क्रमांक (४)। एलोरा जैसे पुरास्थल में भगवान पार्श्वनाथ की ३१ मूर्तियां मिलती है, जिनमें ६ ध्यान मुद्रा में, तथा शेष कायोत्सर्ग मुद्रा में है। गुफा नंबर ३३। पारसनाथ भगवान की मूर्ति के बाई ओर मेवमाली के उपसर्ग चित्रित है तथा दाहिनी प्वार्ष में छत्र धारिणी पद्मावती है। यहां पर भगवान महावीर की १२ तथा ऋषभदेव की पांच मूर्तियां अंकित है। इनके अलावा अजीतनाथ, सुपार्श्वनाथ और नेमिनाथ की भी मूर्तियां मिलती है। यह जैन गुफाएँ भारत देश की विकसित संस्कृति, स्थापत्य कला, वास्तुकला, मूर्ति कला का बेजोड़ नमूना है। जिनके माध्यम से 'अहिंसा परमो धर्म' का संदेश सारे जगत को मिलता है। यह गुफाएँ देखने लाखों पर्यटक देश-विदेश से आते है, जिससे जैन धर्म का प्रचार-प्रसार भी होता है। यह गुफाएँ भारतीय पुरातत्व विभाग के कुशल व्यवस्थापन, सुशाशन मे संचालित है।

इन गुफाओं के उत्तर की ओर पहाड़ी पर १ किलोमीटर की दूरी पर भगवान पारसनाथ का प्राचीन मंदिर बना हुआ है। जगह के उचित चुनाव के कारण तथा मूर्ति के अतिशय के कारण मूर्तिभंजको की नजर इस मंदिर पर नहीं पड़ी। इस कारण यह मंदिर सुरक्षित रहा, पहाड़ी का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही लुभावना है। यह स्थान जन-कोलाहल से दूर और आकर्षक है। इस मंदिर में यक्ष-यक्षिणी सहित महामनोज्ञ, विशालकाय अर्ध पद्मासन १६ फुट ऊंची ६ फीट चौड़ी ध्यानमग्ना, पारसनाथ भगवान की वितराग प्रतिमा विराजमान है। शिल्पकार ने अपनी कल्पना और प्रतिभा द्वारा मानव जगत के आध्यात्मिक और भौतिक संस्कृति के उच्चतम सिद्धांतों को समुचित अंकन करके अपनी कला का कमाल दिखाया है। जिस शिल्पकार ने यह मूर्ति बनाई है वह वास्तविक रूप से अपनी अंतरात्मा में गोते लगाकर भगवान के स्वरुप में तन्मय होकर ही ऐसी अनोखी कला के निर्माण में समर्थ हुआ होगा। प्रतिमा की प्रसन्न मुद्रा, सिर के कुंतल केश, अर्धोन्मीलीत नेत्र, ध्यानमग्न भव्य चेहरा, विशाल कंधे तथा हाथ पर हाथ रखे हुए अंगुलिया, यह सब बातें मूर्ति की वीतरागता और सुंदरता में वृद्धि करती हैं। जिसके दर्शन मात्र से दर्शक हर्ष विभोर होता है। मूर्ति के अगल-बगल में यक्ष-यक्षिणी बनी हुई है, सिंहासन के बीचोबीच एक ओर भगवान पारसनाथ की छोटी मूर्ति बनाई हुई है। बीच में धर्मचक्र है, जिसके एक तरफ प्रतिष्ठाधारक चक्रेश्वर अपनी धर्मपत्नी के साथ है, तो दूसरी ओर चक्रेश्वर के तीनो भाई अनेक आभूषण तथा यज्ञोपवीत आदि से विभूषित है। यहां सब बेजोड़ है। दर्शक तथा यात्री अपूर्व शांति का अनुभव करते है और दर्शन से अपनी यात्रा सफल समझते हैं। मूर्ति के चरणों के नीचे एक शिलालेख अंकित है जिससे विदित होता है कि एलोरा तीर्थ पर शक संवत् ११५६, ईसवी सन १२३४ में श्री वर्धमानपुर के निवासी मालूजी के पुत्र चक्रेश्वर जो धर्मपरायण, दानवीर थे, उन्होंने इस मूर्ति का समारोहपूर्वक प्रतिष्ठा कराई है।

एलोरा में पहले जैन परिवार एक भी नहीं था, आसपास के दूर-दराज के जैन परिवार इस अतिशय क्षेत्र का दर्शन करने आते थे, ३ किलोमीटर दूरी पर सज्जनपुर नाम से एक छोटा सा गांव है, जहाँ २० परिवार दिगंबरी जैन हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र के विकास एवं उद्धार के लिए अच्छा प्रयास किया है। इस क्षेत्र का विकास, सुरक्षा एवं व्यवस्था हो और जैन संस्कृति का अस्तित्व कायम रहे तथा विश्व मे जैन धर्म का प्रचार प्रसार हो इस दूरदर्शिता से परम पूज्य आचार्य श्री समंत भद्र गुरुदेव एवं मुनि श्री आर्यनंदी गुरुदेव ने १९६२ में यहां एक गुरुकुल की स्थापना की, जिसमें आज २०० छात्रों को आवास निवास की समुचित व्यवस्था की गई है, जिन्हें नैतिक शिक्षा के साथ-साथ भौतिक शिक्षा दी जाती है, यह छात्रावास श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचारी आश्रम गुरुकुल के नाम से सुपरिचित है। जो प्रेम, ज्ञान, शील, सेवा, एवं व्यवस्था इन पंचसूत्रों के आधार पर संचालित है। स्कूल मे १०वी कक्षा तक शिक्षा दी जाती है, आज स्कूल में जेनेतर १२०० छात्र अध्ययन कर रहे और अपना नाम रोशन कर रहे हैं। छात्रों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक संस्कार भी प्राप्त हों, जैन धर्म के तत्वग्यान का अध्ययन हो तथा स्वावलंबन आदि कौशल्य निर्माण हो और उत्तम नागरिक बने यही पावन उद्देश्य संस्था का है। यह संस्था कर्मठ कार्यकर्ता श्री वर्धमान जी पांडे की अध्यक्षता मे (मो. ९३७२३३१६१७) तथा डॉक्टर प्रेमचंद जी पाटनी महामंत्री (मो.९४२२५९७३१०) के निर्देशन में अपने कार्यकर्ताओं के साथ सुस्थिति में संचालित है, यहां पर एक समुचित सुविधा देने वाला अतिथिगृह का निर्माण किया गया है। क्षेत्र पर प्रतिवर्ष मोक्ष सप्तमी को वार्षिक मेला का भी आयोजन होता है, अब यहाँ ५० जैन परिवार रहते हैं। आपसे निवेदन है कि इस विश्वविख्यात एलोरा गुफाओं के दर्शन हेतु पहाड़ मंदिर के एवं क्षेत्र के दर्शन हेतु अवश्य पधारें।

-महावीर दीपचंदजी ठोले
महामंत्री-श्री भा.दि. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा महाराष्ट्र
औरंगाबाद (महा.) मोबाइल 07588044495

नगरश्रेष्ठ नट्टल साहू और महाकवि विबुद्ध श्रीधर

१२वीं सदी के ही हरियाणा के महाकवि विबुध श्रीधर में अपूर्व कवित्व शक्ति तो थी ही, वह कुछ घुमक्कड़ प्रकृति का भी था किन्तु उसकी वह घुमक्कड़ प्रकृति रचनात्मक एवं सुक्ष्मेक्षिका दृष्टि सम्पन्न थी। विबुद्ध श्रीधर का जन्म संवत् ११८६ में हरयाणा के अग्रवाल जैन परिवार में हुआ था।

एक दिन जब अपनी एक अपभ्रंश भाषात्मक चंदप्पहचरिउ (चन्द्रप्रभ-चरित) को लिखते-लिखते कुछ थकावट का अनुभव करने लगा, तो उसकी कुछ घूमने की इच्छा हुई। अतः वह पैदल ही यमुनानगर होता हुआ ढिल्ली (तेरहवीं सदी में यही नाम प्रसिद्ध था) आ गया।

ढिल्ली (दिल्ली) में सुन्दर-सुन्दर चिकनी चुपड़ी चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर चलते-चलते तथा विशाल ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं को देखकर प्रमुदित मन जब वह आगे बढ़ा जा रहा था तभी मार्ग में एक व्यक्ति ने उसके हाव-भाव देखकर उसे परदेशी और (अजनबी) समझा अतः जिज्ञासावश उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो? तब उसने (अजनबी) यही कहा मैं हरयाणा निवासी विबुध श्रीधर नाम का कवि हूँ। एक ग्रन्थ लिखते-लिखते कुछ थक गया था, अतः मन को ऊर्जास्वित करने हेतु यहाँ घूमने आया हूँ। यह प्रश्नकर्ता था अल्हण साहू जो समकालीन दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर (तृतीय) की राज्यसभा का सम्मानित सदस्य था। उसने कवि को सलाह दी कि 'वह ढिल्ली के नगरसेठ नट्टल से अवश्य भेंट करें। वो अग्रवाल श्रेष्ठि साहू जेजा की तीसरी संतान हैं। नट्टल ढिल्ली के वणिकों में अग्रणी हैं और नंगपाल तोमर के दरबार में मंत्री हैं। उनका व्यापार पूरे देश में फैला है। साहू नट्टल की ''नगरसेठ'' की उपाधि सुनते ही कवि अपने मन में रुष्ट हो गया। उसने अल्हण साहू से स्पष्ट कहा कि धनवान सेठ लोग कवियों को सम्मान नहीं देते। वे क्रुद्ध होकर नाक-भौंह सिकोड़ कर धक्का-मुक्की कर उसे घर से निकाल बाहर करते हैं। **यथा-**

अमरिस-धरणीधर-सिर विलग्ग णर सरुव तिक्खमुह कण्ण लग्ग।
असहिय-पर-णर-गुण-गुरुअ-रिद्धि दुव्वयण हणिय पर-कज्ज सिद्धि।
कय णासा-मोडण मत्थरिल्ल भू-भिउडि-भंडि णिंदिय गुणिल्ल।।

आदि कहकर महाकवि ने नट्टल साहू के यहाँ जाना अस्वीकार कर दिया। फिर अल्हण साहू ने कहा कि क्या तुम नट्टल को नहीं जानते? वो बहुत ही उदार और सहृदय हैं। अल्हण साहू के बार-बार समझाने पर वह नट्टल के घर पहुँचा तो नट्टल की सज्जनता और उदारता से वह अत्यन्त प्रभावित हुआ। भोजनादि कराकर नट्टल ने महाकवि से कहा- ''मैंने यहाँ एक विशाल नाभेय (आदिनाथ का) मंदिर बनवाकर उसके विशाल प्रांगण में मानस्तंभ बनवाया है। मंदिर शिखर के ऊपर पंचरंगी झण्डा भी फहराया है।'' यह कहने के बाद नट्टल साहू ने महाकवि से निवेदन किया कि मेरे दैनिक स्वाध्याय के लिए पासणाहचरिउ (पार्श्वनाथ चरित) की रचना करने की कृपा करें। कवि ने उक्त नाभेय-मंदिर में बैठकर उक्त ग्रन्थ की रचना कर दी जिसके लिए नट्टल ने कवि का आभार मानकर उसे सम्मानित किया। श्रीधर ने पासणाहचरिउ में अपना परिचय देते हुए कहा है-

''सिरि अगरवाल कुल कमल मित्तु, सुधम्म कम्म पवियण्य- वित्तु''

यह सब कुछ तो राजा अनंगपाल तोमर (तृतीय) के शासन-काल में हो गया था। किन्तु बार में मुहम्मद गौरी का शासन हुआ और उसकी मृत्यु के बाद उसका परम विश्वस्त गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक (वि.सं.१२५०) जब ढिल्ली का शासक बना तब उसने नाभेय मंदिर तथा अन्य मंदिरों को ध्वस्त कराकर उनकी सामग्री से कुतुबमीनार का निर्माण करा दिया तथा नाभेय मंदिर के प्रांगण में कुछ परिवर्तन कराकर उसे कुतुब्बुल इस्लाम मस्जिद का निर्माण करा दिया। नट्टल साहू के बनवाये नाभेय मंदिर परिसर को तोड़कर बनाये गए कुतुब्बुल इस्लाम मस्जिद के स्तंभ-प्रखर अग्रवाल से साभार।

मध्य युग में जैनों का चिकित्सा और औषधि क्षेत्र में योगदान

जैन धर्म न केवल मुक्ति के पथ की ओर अग्रसर होने का आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है वरन् यह मानव जाति को कृषि, अभियांत्रिकी, विज्ञान, गणित, साहित्य, व्याकरण, दर्शन साहित्य और चिकित्सा विषयों का ज्ञान देकर उपकृत करता है। जैन धर्म का भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर प्रभाव किसी भी खोजी उत्साही व्यक्ति के लिए अपरिहार्य विषय हो सकता है। प्राचीन जैनाचार्यों का ज्ञान इतना विस्तृत था कि वह इन सारे उपर वर्णित विषयों में निष्णात थे और जन कल्याणार्थ अपने इस ज्ञान का बहुतायत से उपयोग भी किया करते थे। प्राचीन साहित्यिक और आगमिक प्रमाणों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि जैनाचार्य द्वारा अपनी दैवीय शक्तियों और ज्ञान के आधार पर जैन मठों में निशक्त और व्याधिग्रस्त लोगों का उपचार किया जाता था। यह तथ्य कई भारतीय राज्यों से प्राप्त पुरातत्त्वीय प्रमाणों और शिलालेखीय प्रमाणों के आधार पर सिद्ध हुआ है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में जैनाचार्यों द्वारा औषधि ज्ञान और इस ज्ञान पर आधारित शल्य क्रिया के कई उदाहरण सामने आते हैं परन्तु इस प्रकार के उदाहरण शिलालेखीय प्रमाणों में काफी कम पाए गए हैं। आयुर्वेद में उल्लेखित शल्य क्रिया का सबसे प्रारंभिक उदाहरण हमें आधुनिक तेलंगाना राज्य के नालगोंडा जिले के अन्तर्गत स्थित भुवनगिरि तालुका के सैदापुर नामक ग्राम से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख १००० वर्ष प्राचीन होकर मध्यकाल के दक्षिण भारत पर शासनारूढ़ कल्याणी चालुक्य शासक जगदेकमल्ल जयसिंह द्वितीय (१०१५-१०४२ ईस्वी) के काल से संबंधित है। वैसे प्राचीन भारतीय आयुर्वेद विज्ञान में चरक और सुश्रुत को प्रारंभिक आयुर्वेदिक चिकित्सकों के रूप में जाना जाता है परन्तु इनका काल इसके आसपास या पूर्व का माना गया है और चरक के द्वारा लिखित चरक संहिता और सुश्रुत कृत सुश्रुत संहिता आज भी आयुर्वेद विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक और आवश्यक है। प्राचीन भारतीय शिलालेखों के आधार पर यह निष्कर्ष किया जा सकता है कि प्राचीन जैन विद्याश्रमों में न केवल विद्यार्थियों को ज्ञान विज्ञान, गणित, कला, साहित्य, दर्शन और चिकित्सा में निष्णात किया जाता था वरन् असहाय, निर्धन और बीमार व्यक्तियों का उपचार भी किया जाता था। दक्षिण भारत की जैन गुफाओं के आसपास कई पत्थर के खरल प्राप्त हुए हैं जिनमें सम्भवतः इन बीमार और व्याधिग्रस्त व्यक्तियों का उपचार किया जाता था। जैन पद्धति से उपचार और चिकित्सा इस आधार पर महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इनमें किसी भी जंतु उत्पाद, मांस, रक्त और जंतु स्राव का पूर्णतया निषेध किया गया है जो कि जैनधर्म के अहिंसा के मूल सिद्धांतों के अनुरूप ही है। चरक और सुश्रुत आदि ने भी अपने चिकित्सा पद्धति में जंतु उत्पादों का निषेध नहीं किया है और इनकी चिकित्सा पद्धति में मधु भी बहुतायत से उपयोग किया जाता है जिसका प्राचीन जैन आचार्यों ने निषेध किया है। जैन आचार्यों द्वारा उल्लेखित और प्रतिपादित चिकित्सा पद्धति पूर्णतया अहिंसात्मक और जैन धर्म के मूल सिद्धांतों के अनुरूप ही है।

आचार्य भगवंत पूज्यपाद स्वामी जो कि ईसा की पांचवीं और छठी शताब्दी में हुए उन्होंने अनेक विषयों पर अनेक ग्रंथों का लेखन किया परन्तु उनकी चिकित्सा के क्षेत्र में लिखित ग्रन्थ को आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। आचार्य समन्तभद्र द्वारा लिखित ग्रन्थ 'सिद्धांत रसायन कल्प' और 'पुष्प आयुर्वेद भी काफी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। अफसोस की बात यह है कि दोनों ही प्राचीन कृतियाँ कहीं से भी प्राप्त नहीं हुई हैं। इन दोनों ही ग्रंथों में १८००० श्लोक हैं जिनमें "सिद्धांत रसायन कल्प" के ३००० श्लोक अन्य पुस्तकों के संदर्भों में प्राप्त हुए हैं और यह ग्रन्थ आयुर्वेद में रसायन के उपयोग द्वारा चिकित्सा पर आधारित है। दूसरे ग्रन्थ 'पुष्प आयुर्वेद' में भी पुष्पों पर आधारित चिकित्सा पद्धति के १८००० श्लोक हैं। यह ग्रन्थ भी वर्तमान में हमें प्राप्त नहीं है।

इस कड़ी में प्रसिद्ध जैन आचार्य उग्रादित्य ने आचार्य पूज्यपाद द्वारा लिखित ग्रन्थ पर टीका लिखी जिसका नाम 'कल्याणकारक' है। यह ग्रन्थ आयुर्वेद ग्रंथों में काफी महत्त्वपूर्ण है। आचार्य उग्रादित्य प्रसिद्ध राष्ट्रकूट शासक 'अमोघवर्ष' (८१४-८७८ ईस्वी) के समकालीन थे। इस ग्रन्थ में उल्लेखित कई अन्य प्राचीन जैन आचार्यों और चिकित्सकों के नाम भी इस ग्रन्थ में आये हैं। इनमें से कुछ चिकित्सकों के नाम यहाँ उल्लेखित हैं।

काया चिकित्सा-दरसाधु गुरु, बाल चिकित्सा-मेघनाद, गृह चिकित्सा-सिद्धसेन, विष चिकित्सा-सिद्धसेन, शल्य तंत्र-पत्रपाद स्वामी, शालाक्य तंत्र-पूज्यपाद, रसायन-सिंहनाद, वजीकरण-सिंहनाद, सभी आठों अंग-समन्तभद्र।

PRE-ENGINEERED
STEEL BUILDINGS

LOYA PEB
PRE - ENGINEERED STEEL BLDGS
An ISO 9001:2008 Certified Company

Take Advantage of our experience

Wal-mart Pvt. Ltd., Amravati, Shopping Mall 50,000 Sq. Ft.

Successfully Delivered
225 Buildings
3.5 Million Sq. Ft.

Now we offer smaller sheds in latest technology of Galvanised cold from

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY
LOYA PRE ENGINEERED BUILDINGS PVT. LTD.
sales@loyapeb.com, Phone No. : 9823385115, 9850801148
www.loyapeb.com
Member of Indian Green Building Council

हपावतजी ने मुंबई को सेनिटाईज करने के लिए खोजा अनोखा तरीका

10 लाख देकर किया नगर निगम को सहयोग

आज कोरोना का आतंक मुंबई पर छा गया है। पूरा शहर लॉकडाउन है। शहर को सेनिटाईज करने की जरूरत है लेकिन नगर निगम के पास मशीन्स नहीं हैं। इसे देखकर **भा. दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, दानवीर श्री जमनालाल हपावत** एवं उनके बेटों ने नगर निगम को दोनों साईड ६-६ मीटर फव्वारा करने की मशीन्स लगाकर सेनिटाईज करने की सलाह दी। साथ ही **१० लाख रुपये देकर ४ मशीन्स नगर निगम को भेंट दीं** और ऑपरेटर हेतु अपनी कंपनी के कर्मचारी भी उपलब्ध कराये।

50वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर जीर्णोद्धार हेतु सहयोग

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. हरिश्चन्द्र जैन, भिलाई (छत्तीसगढ़) ने दिनांक ७ मई २०२० को अपने वैवाहिक जीवन की ५०वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ ५१०० रुपये की राशि भेजी है। तीर्थ संरक्षिणी महासभा परिवार की ओर से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद तथा विवाह की ५०वीं वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें। हम भगवान् वीर प्रभु से आपके सफल एवं सुखद दाम्पत्य जीवन की मंगल कामना करते हैं।

-कमल कुमार जैन रांवका, वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री-श्री भा. दि. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

श्रीमती चंदा देवी सेठी, अजमेर

श्रीमान् पदमचंद जी और चंदा देवी सेठी के सुपौत्र व श्री प्रदीप व श्रीमती प्रियंका सेठी के सुपुत्र श्री प्रत्यक्ष सेठी के २४वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में दादी चंदा देवी द्वारा प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए रु.५०००/- की राशि प्रदान की गई। श्रीमती चंदा देवी सेठी समय-समय पर जीर्णोद्धार हेतु राशि देती रहती हैं। श्री प्रत्यक्ष सेठी का जन्म ५ मार्च को हुआ था और पूरा परिवार ही धर्मपराण है, दादाजी बैंक ऑफ बड़ौदा से अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं और पिताजी के सोने चांदी का व्यवसाय नया बाजार अजमेर मे है। तीर्थ संरक्षिणी महासभा, परिवार की ओर से जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, व स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों ऐसी वीर प्रभू से कामना है।

-अशोक गोधा, अजमेर

सोनी जी नहीं रहे

भीलवाड़ा का एक प्रसिद्ध नाम श्री शांतिलाल जी सोनी, मालिक शिखर प्रिन्टर्स एन्ड स्टेशनर्स का देहावसान २५ दिसम्बर २०१९ को दिन में एक बजे हो गया। आप का धर्म व साधुजन में दृढ़ विश्वास था, आप भीलवाड़ा की विभिन्न संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे, शास्त्रीनगर जैन मंदिर के अध्यक्ष भी रहे। आप काफी समय से अस्वस्थ थे। आप पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए। आपके पांच भ्राता और तीन बहनें और चार पुत्र व एक पुत्री है और पौत्र व पौत्रियाँ व दोहिते व दोहतियाँ हैं। आपके बड़े सुपुत्र जीवन बीमा निगम में महत्त्वपूर्ण पद पर हैं और दो पुत्र आफसेट प्रेस का काम करते हैं और एक पुत्र की राजसमद में फैक्ट्री है। श्री सोनी जी का ससुराल कोठियां ग्राम के एक प्रतिष्ठित परिवार में है। परिवार का शाहपुरा (भीलवाड़ा) रियासत में अपना नाम रहा है। वीर प्रभू से प्रार्थना है कि परिवार को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करावें। परिवार द्वारा आपकी स्मृति में ११००/- रुपये की राशि प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार हेतु प्रदान की गयी है।

-अशोक गोधा, अजमेर

विनम्र अपील

महोदय, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा विगत २१ वर्षों से प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं मूर्तियों की सुरक्षा के कार्य में संलग्न है। जैसा कि आपको विदित ही है कि गत २ माह से कोविद-१६ के कोरोना वायरस के चलते पूरे विश्व की स्थिति बहुत ही बिगड़ी हुई है। इस विषम परिस्थित में भी तीर्थ संरक्षिणी महासभा प्राचीन मंदिरों एवं मूर्तियों की सुरक्षा के कार्य में अहम भूमिका निभा रही है।

इसी श्रृंखला में निम्न ३ स्थानो पर प्राचीन मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं-

ईडर गुजरात से २५ किलीमीटर दूर दावदा गाँव जहाँ पर खुदाई के दौरान करीब ४२ मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। खुदाई का कार्य जारी है और भी मूर्तियां मिलने की संभावना है। ईडर की समाज के अध्यक्ष से बात चल रही है शीघ्र ही समाज मूर्तियां प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

गांव भोजपुर जोकि धौलपुर (राजस्थान) से १२ किलोमीटर दूर है खेत में जमीन समतल करने के लिए जेसीबी चलाए जाने पर एक बहुत ही मनोहारी जिन प्रतिमा निकली है जो कि वहीं खेत पर रखी हुई है। बताया जाता है कि भोजपुर गांव राजा भोज से संबंधित है और यहाँ पर खुदाई में मूर्तियाँ एवं मंदिर के अवशेष निकलते रहते हैं। धौलपुर के श्री विवेक जैन से इस संदर्भ में वार्ता हुयी है उन्होंने बताया कि यहां १५ दिन पूर्व खुदाई हुई थी जिसमें यह मूर्ति निकली है और कुछ मूर्तियां एवं मंदिर के अवशेष यहां पर पहले भी निकल चुके हैं। शीघ्र ही जिलाधिकारी की स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात उसी स्थान पर जीर्णोद्धार का कार्य कर मूर्तियों को सुरक्षित किया जायेगा।

ग्राम जयपुर जो विष्णुपुर से १५ किमी. दूर जिला-बाकुंड़ा (पं बंगाल) में है यहाँ के जंगल में भगवान आदिनाथ की खड्गासन प्रतिमा प्राप्त हुई है। गांव वालों से जमीन के लिये बात चल रही है शीघ्र ही जीर्णोद्धार कार्य शुरू कर मूर्ति को सुरक्षित किया जायेगा।

समाज से विनम्र निवेदन है कि जीर्णोद्धार कार्य हेतु अधिक से अधिक राशि भिजवाने की कृपा करें ताकि प्राचीन मूर्तियों एंव मंदिरों की सुरक्षा का कार्य किया जा सके।

दानराशि भेजें चेक/ऑनलाइन

"BDJ (TIRTH SANR) MAHASABHA" Branch Name- S.B.I., Aishbagh Lucknow Branch

A/c No. 10130995311, **IFS Code-** SBIN0002504

कृपया राशि भेजकर हमारे कार्यालय के **Whatsapp 9129065900** या **0522-2662581** या **9335920972** पर सूचित करने की कृपा करें।

निवेदक- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

निर्मल कुमार जैन सेठी	महिपाल पहाड़िया	राजकुमार जैन सेठी	कमल कुमार जैन रांवका
अध्यक्ष	अध्यक्ष-स.वि.उपसमिति	महामंत्री	वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री
09891029717	09463542322	09339826125	09335920972

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

(दिनांक 01-02-2020 से 31-03-2020 तक समाज के महानुभावों से प्राप्त दानराशि का विवरण)

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
	श्रीमती भावनाबेन कोठारी, ईडर (गुजरात) द्वारा 55,300/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
01.	श्रीमती प्रियाबेन आशीष कुमार कोठारी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
02.	श्रीमती भावनाबेन सुरेन्द्र कुमार कोठारी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	1,560.00
03.	श्रीमती चंद्रकलाबेन जीवराजभाई शाह, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	501.00
04.	श्रीमती कोकिलाबेन राजेन्द्र कुमार संखसेरा, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
05.	श्रीमती प्रफुल्लाबेन दिनेश कुमार शाह, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
06.	श्रीमती सुमित्राबेन शशिकान्त शाह, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
07.	श्रीमती किरणबेन राजकुमार गांधी, कलख सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
08.	श्रीमती शान्ताबेन जयंतीलाल कोठारी, कोठारी फानी, ईडर (गुजरात)	1,135.00
09.	श्रीमती दहीबेन राजेन्द्र कुमार शाह, कोठारी फानी, ईडर (गुजरात)	500.00
10.	श्रीमती विमलाबेन रमेशचंद दोशी, चम्पा गली, ईडर (गुजरात)	500.00
11.	श्रीमती बसंतीबेन भद्रकुमार संखसेरा, कुण्ड उपर, ईडर (गुजरात)	750.00
12.	श्रीमती रसीलाबेन दिलीप कुमार दोशी, कुण्ड उपर, ईडर (गुजरात)	1,500.00
13.	श्रीमती वैजयन्तीबेन बी. शाह, ईडर (गुजरात)	11,111.00
14.	श्रीमती किरणबेन रोहित कुमार मेहता, कुण्ड उपर, ईडर (गुजरात)	500.00
15.	श्रीमती झरनाबेन सतीश कुमार दोशी, गरवारा, ईडर (गुजरात)	500.00
16.	श्रीमती जसीबेन पूनमचंद गांधी, निकट विश्वकर्मा मंदिर, ईडर (गुजरात)	600.00
17.	श्रीमती सुचिताबेन रितेश कुमार दोशी, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	1,000.00
18.	श्रीमती कोकिलाबेन अशोक कुमार गांधी, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	700.00
19.	श्रीमती पूर्णिमाबेन राकेश कुमार गांधी, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	500.00
20.	श्रीमती सुरेखाबेन मगन कुमार संखसेरा, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	500.00
21.	श्रीमती नीताबेन नैमिष कुमार गांधी, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	500.00
22.	श्रीमती शर्मिष्ठाबेन चेतन कुमार संखसेरा, गढ़वारा, ईडर (गुजरात)	500.00
23.	श्रीमती दीनाबेन कमलेश कुमार वोरा, ईडर (गुजरात)	500.00
24.	श्रीमती नेहाबेन अनिल कुमार गांधी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
25.	श्रीमती मालतीबेन पंकज कुमार दोशी, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
26.	श्रीमती शर्मिष्ठाबेन मुकेश कुमार संखसेरा, श्रीनगर सो., ईडर (गुजरात)	500.00
27.	श्रीमती मंजुलाबेन जसवन्तलाल दोशी, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
28.	श्रीमती चेतनाबेन जीतू भाई दोशी, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
29.	श्रीमती प्रज्ञाबेन राकेश कुमार गांधी, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	1,000.00
30.	श्रीमती इन्द्राबेन सोमालाल शाह, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
31.	श्रीमती लताबेन हेमेन्द्र कुमार दोशी, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	1,000.00
32.	मे. माडर्न प्रोविजन स्टोर, श्रीनगर सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
33.	श्रीमती सुप्रभाबेन शांतिलाल दोशी, ईडर (गुजरात)	500.00
34.	श्रीमती प्रवीणाबेन सुरेश कुमार गांधी, दलजीतनगर, ईडर (गुजरात)	1,300.00
35.	श्रीमती साधनाबेन जगदीश चंद्र कोठारी, दलजीतनगर, ईडर (गुजरात)	1,000.00
36.	श्रीमती सुवर्णाबेन महावीर कुमार गांधी, ईडर (गुजरात)	500.00
37.	श्रीमती शर्मिष्ठाबेन विनोद गांधी कोठारी, दलजीतनगर, ईडर (गुजरात)	500.00
38.	श्रीमती रजनीबेन जे.सी. शाह, दलजीतनगर, ईडर (गुजरात)	500.00
39.	श्रीमती शांतिबेन वी. शाह, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
40.	श्रीमती जयन्तिकाबेन प्रकाशचंद दोशी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
41.	श्रीमती प्रीतीबेन भुपत कुमार दोशी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
42.	श्रीमती वीणाबेन हंसमुखलाल दोशी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
43.	श्रीमती दमयन्तीबेन बाबूलाल दोशी, आदिनाथ सोसायटी, ईडर (गुजरात)	500.00
44.	श्रीमती स्मिताबेन धर्मेन्द्र कुमार दोशी, प्रक्षाल भवन, ईडर (गुजरात)	500.00
45.	श्रीमती नारंगीबेन बाबूलाल कोठारी, सानिध्य बंगला, ईडर (गुजरात)	500.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
46.	श्रीमती भारतीबेन जयेश कुमार गांधी, सानिध्य बंगला, ईडर (गुजरात)	800.00
47.	श्रीमती उर्मिलाबेन मुकुन्द भाई दोशी, महावीरनगर सो., ईडर (गुजरात)	500.00
48.	श्रीमती शोभनाबेन दिनेश कुमार दोशी, सानिध्य बंगला, ईडर (गुजरात)	500.00
49.	श्रीमती शोभाबेन भरत कुमार संखसेरा, सवितापार्क सो., ईडर (गुजरात)	500.00
50.	श्रीमती अंजू जैन नलिन कुमार संखसेरा, ईडर (गुजरात)	1,000.00
51.	श्रीमती वर्षाबेन नयन कुमार दोशी, सानिध्य बंगाल, ईडर (गुजरात)	500.00
52.	श्रीमती कविताबेन चन्द्रेश भाई शाह, महावीरनगर सो., ईडर (गुजरात)	500.00
53.	श्रीमती चंदनबेन प्रवीणचंद गांधी, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
54.	श्रीमती मनीषाबेन अभय कुमार जैन, डूंगरपुर (राजस्थान)	500.00
55.	श्रीमती प्रतीक्षाबेन कल्पेश कुमार शाह, अहमदाबाद (गुजरात)	500.00
56.	श्रीमती निकेतनबेन विपुल कुमार फड़िया, अहमदाबाद (गुजरात)	1,000.00
57.	श्रीमती नेहाबेन जे. मोडासिया, अहमदाबाद (गुजरात)	500.00
58.	श्रीमती रजनी जैन नरेन्द्र कुमार शाह, जवानपुरा, ईडर (गुजरात)	500.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**8,343.00**
59.	श्री अमित जैन पियूष जैन, न्यू रोहतक रोड, करोलबाग, नई दिल्ली	1,008.00
	श्री नवरतन जैन, चण्डीगढ़ (पंजाब) द्वारा 4,200/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
60.	श्री रजनीश जैन, एम.एस. इन्क्लेव, डोकोली, जिराकपुर (पंजाब)	2,100.00
61.	श्री नितिन जैन सचिन जैन, ममता इन्क्लेव, डोकोली, जिराकपुर (पंजाब)	2,100.00
	श्रीमती आशा जैन, अलवर (राजस्थान) द्वारा 3,500/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
62.	श्री अनिल जैन, ८७-विकास पथ, अलवर (राज.)	2,100.00
63.	श्रीमती चन्द्रकांता जैन, बीच का मोहल्ला, अलवर (राज.)	1,000.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**400.00**
64.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम, उदयपुर (राज.)	7,700.00
65.	श्री दिगम्बर जैन मंदिर जनकपुरी, ज्योतिनगर, जयपुर (राज.)	13,305.00
66.	श्री दिगम्बर जैन मंदिर, रजपुरा रोड, नई दिल्ली	3,200.00
	श्रीमती मन्जू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) द्वारा 8,100/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
67.	श्रीमती सरोज जैन, बूंदी (राज.)	500.00
68.	श्रीमती इलायचीदेवी जैन, बूंदी (राज.)	500.00
69.	श्रीमती मोहिनी जैन, बूंदी (राज.)	500.00
70.	श्रीमती आशा जैन, बूंदी (राज.)	500.00
71.	श्रीमती प्रमिला जैन, बूंदी (राज.)	500.00
72.	श्रीमती मनोरमा जैन, बूंदी (राज.)	500.00
73.	श्रीमती मन्जू जैन शाह, बूंदी (राज.)	500.00
74.	श्रीमती कान्ता जैन महेन्द्र जैन गोधा, बूंदी (राज.)	500.00
75.	श्रीमती अनीता जैन, बूंदी (राज.)	500.00
76.	श्रीमती शशीकला जैन, कापरेन, बूंदी (राज.)	500.00
77.	श्रीमती उर्मिला जैन, बूंदी (राज.)	500.00
78.	श्री राजेन्द्र कुमार पाटनी, गुरुनानक कॉलोनी, बूंदी (राज.)	500.00
79.	श्रीमती मन्जू जैन, मु.पो.-बिजौलिया, भीलवाड़ा (राज.)	2,100.00
	श्री नरेशचन्द जैन, सीतापुर (उत्तरप्रदेश) द्वारा 2,500/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
80.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, प्रेमनगर, सीतापुर (उ.प्र.)	910.00
81.	श्रीमती पायल जैन, प्रेमनगर, सीतापुर (उ.प्र.)	1,000.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**590.00**
	श्री नवरतन जैन, चण्डीगढ़ (पंजाब) द्वारा 2,200/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
82.	श्री राजकुमार जैन, सेक्टर ४२-बी, चण्डीगढ़ (पंजाब)	1,100.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र. दान दातार का नाम व पता	धनराशि
83. श्री प्रदीप जैन, सेक्टर ३७-ए, चण्डीगढ़ (पंजाब)	1,100.00
84. श्री शांतिनाथ दि. जैन चैत्यालय, सैनिक फार्म, खानपुर, नई दिल्ली	17,100.00
श्रीमती शरबतदेवी गंगवाल, गिरिडीह (झारखंड) द्वारा 32,700/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
85. श्रीमती मन्जू देवी सरावगी, गिरिडीह (झारखण्ड)	2,000.00
86. श्रीमती सुनीला गंगवाल, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,100.00
87. श्रीमती भंवरी देवी सरावगी, गिरिडीह (झारखण्ड)	2,000.00
88. श्रीमती कान्ता सरावगी, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,000.00
89. श्रीमती श्रीदेवी सरावगी, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,100.00
90. मेसर्स संजय स्टोर, गिरिडीह (झारखण्ड)	2,100.00
91. श्रीमती सुनयना देवी सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,000.00
92. श्री ज्ञानचंद बड़जात्या, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,100.00
93. श्रीमती हेमलता सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,000.00
94. श्रीमती इन्द्रा देवी जैन सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	700.00
95. श्रीमती कान्ता देवी जैन रारा, गिरिडीह (झारखण्ड)	700.00
96. श्रीमती मुन्नीबाई जैन सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
97. श्रीमती इन्दू जैन सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
98. श्रीमती रतनी देवी सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
99. श्रीमती सन्तोष जैन पहाड़िया, ऊंझा (गुजरात)	2,100.00
100 श्रीमती मीना देवी सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
101 श्रीमती संगीता सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
102 श्री बंशीधर जैन शाह, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,100.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र. दान दातार का नाम व पता	धनराशि
103 श्रीमती गुणमाला देवी जैन शाह, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,000.00
104 श्रीमती चन्दा देवी शाह, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
105 श्रीमती मन्जू देवी शाह, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
106 श्रीमती विमला देवी शाह, गिरिडीह (झारखण्ड)	700.00
107 श्रीमती कुसुम जैन गोधा, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
108 श्रीमती सुशीला देवी जैन पाण्ड्या, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
109 श्रीमती शोभा जैन गंगवाल, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
110 श्री पवन जैन, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
111 श्रीमती इन्द्रा देवी बज, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
112 श्रीमती भंवरी देवी छाबड़ा, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
113 श्रीमती आशा देवी सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
114 श्रीमती पुष्पा बाकलीवाल, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
115 श्रीमती सुलोचना जैन, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
116 श्रीमती मीना देवी बज, गिरिडीह (झारखण्ड)	1,100.00
117 श्रीमती रंजना सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
118 श्रीमती बसन्ती देवी झांझरी, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
119 श्रीमती सुषमा पाण्ड्या, गिरिडीह (झारखण्ड)	2,100.00
120 श्रीमती सरोज देवी गंगवाल, गिरिडीह (झारखण्ड)	500.00
दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**1,300.00**
121 श्री अमित जैन पियूष जैन, करोलबाग, नई दिल्ली	1,008.00
कुल योग	**1,51,821.00**

'तीर्थ जीर्णोद्वार' हेतु प्राप्त दानराशि

क्र. दान दातार का नाम व पता	धनराशि
01. श्रीमती शम्पा शाह, डी-३, बालीनगर, नई दिल्ली	2,000.00
02. श्री हेमराज विनोद कुमार जैन, मु.पो.-लावा, टोंक (राज.)	11,000.00
03. श्री सुभाष बामनराव आलसेठ, भाजीबाजार, मुर्तिजापुर, अकोला (महा.)	1,000.00
04. श्री सुरेश कुमार जैन, माल रोड, फिरोजपुर कैण्ट (पंजाब)	1,100.00
05. श्री सुशील कुमार जैन, बस्ती-टेन्कावली, फिरोजपुर (पंजाब)	1,100.00
06. श्री कमल कुमार जैन रांवका द्वारा समाज के दातारों से एकत्र राशि	11,000.00
07. श्री अरुण कुमार ग्राहाणकरी जैन, वृंदावन सो., सायन (पूर्व) मुम्बई	5,000.00
08. श्रीमती अनुपमा जैन, ओल्ड कोर्ट रोड, सिविल लाइन्स, लुधियाना (पंजाब)	2,000.00
09. मे. सुरेश जनरल स्टोर, मेन बाजार, पोस्ट-फागी, जयपुर (राज.)	5,000.00
10. श्री अशोक कुमार जैन, फ्रेन्ड्स अपार्टमेन्ट, IP Ext., दिल्ली	25,000.00
11. श्री रजत जैन, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
12. श्री अमित जैन गोधा, चम्पाबाग, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)	3,100.00
13. श्री आलोक कुमार बड़जात्या, भागलपुर (बिहार)	1,100.00
14. श्री विनय पी. जैन कोटड़िया, आर.टी.नगर, दिरूर रोड, बंगलौर	1,000.00
15. सुवर्णा मुन्दुरी सेवा प्रतिष्ठान, कोलकाता (प.बंगाल)	1,10,000.00
16. श्री अशोक कुमार जैन, फ्रेंड्स अपार्टमेन्ट, आई.पी.एक्स. दिल्ली	25,000.00
17. श्रीमती निशा जैन, सेक्टर ४२-सी, चण्डीगढ़ (पंजाब)	1,100.00
18. श्री टी.सी. जैन, सेक्टर ७, पंचकूला (हरियाणा)	5,100.00
19. श्री जिनेन्द्र जैन अरविन्द जैन, सेक्टर १२-ए, पंचकूला (हरियाणा)	3,100.00
20. श्रीमती अपूर्वा आर. अन्निगेरी, नवीन पार्क, हुबली (कर्नाटक)	51,000.00
21. श्रीमती सुरेखा आर. अन्निगेरी, नवीन पार्क, हुबली (कर्नाटक)	12,500.00
22. श्री अजित प्रसाद जैन, सेक्टर-१५, पंचकूला (हरियाणा)	5,100.00
23. श्री पी. अनन्थराजा, ऐरोली, सेक्टर २०-डी, नवी मुम्बई	5,001.00
24. सर्वश्री लाडादेवी सेवा प्रतिष्ठान, कोलकाता (प.बंगाल)	2,40,000.00
25. श्री १००८ सहस्रकूट दिगम्बर जैन मंदिर, फलटण, सतारा (महा.)	3,000.00
26. शर्मीला पारस जैन बाकलीवाल, तह.-पैठण, औरंगाबाद (महा.)	6,100.00
27. श्री विकास दीपचांद जैन पाटनी, सुराना नगर, औरंगाबाद (महा.)	1,000.00
28. श्री अरुण कुमार ग्राहाणकरी जैन, वृंदावन सो., सायन (पूर्व), मुम्बई	5,000.00

'तीर्थ जीर्णोद्वार' हेतु प्राप्त दानराशि

क्र. दान दातार का नाम व पता	धनराशि
29. श्री शांतिनाथ अग्रवाल दि. जैन मंदिर, हुडको, औरंगाबाद (महा.)	2,601.00
30. श्रीमती कमलादेवी सोगानी, इन्द्रानगर, लखनऊ (उ.प्र.)	1,650.00
31. श्री हुकमचंद जैन पाटनी, गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.)	1,550.00
32. श्री आशीष कुमार जैन, इन्द्रानगर, लखनऊ (उ.प्र.)	1,800.00
33. श्री राजाराम जैन, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
34. श्री विनोद कुमार जैन, गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.)	1,600.00
35. श्री विमलचंद जैन, यहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,400.00
36. श्रीमती कौशल्या देवी जैन छाबड़ा, पार्क व्यू रोड, गुवाहाटी (आसाम)	1,000.00
37. श्री आलोक कुमार जैन गंगवाल, हास्पिटल रोड, सिलचर (आसाम)	2,100.00
38. श्री अनिल जैन टोंग्या, कोहिमा रोड, डीमापुर (नागालैण्ड)	10,600.00
39. श्री एस.के. जैन, सेक्टर-१०, पंचकूला (हरियाणा)	1,100.00
40. श्रीमती शम्पा शाह, डी-३, बालीनगर, नई दिल्ली	2,000.00
41. श्री जम्बू कुमार जैन, माधोनगर, फ्रीगंज, उज्जैन (म.प्र.)	25,000.00
42. श्रीमती निर्मल जैन, सेक्टर-४, पंचकूला (हरियाणा)	5,000.00
43. श्री सन्तोष कुमार जैन सेठी, अमीनाबाद, लखनऊ (उ.प्र.)	1,750.00
44. श्री रमेशचन्द जैन, रकाबगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,650.00
45. श्री ज्ञानचन्द जैन, रकाबगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,600.00
46. श्री संजय जैन, सेक्टर ४१-ए, चण्डीगढ़ (पंजाब)	1,100.00
47. श्री निवास सुनील कुमार जैन, सेक्टर ४०-सी, चण्डीगढ़ (पंजाब)	3,200.00
48. श्री अनिल कुमार जैन, मौलवीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
49. श्री लोकेश कुमार जैन, राजा बाजार, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
50. श्री ऋषभ जैन, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
51. श्री सुशील कुमार जैन, राजा बाजार, लखनऊ (उ.प्र.)	1,000.00
52. श्री धर्मचंद जैन पहाड़िया, श्री टायर्स, २२-गोदाम, जयपुर (राज.)	50,000.00
53. श्रीमती अनोखादेवी, शिखरचंद, नवीन, पवन व महेश जैन, भीलवाड़ा (राज.)	1,100.00
54. श्रीमती चन्दा देवी सेठी, अजमेर (राज.)	5,000.00
कुल योग	**6,76,202.00**

स्वागत है तीर्थ संरक्षिणी महासभा के नये सदस्यों का (01-02-2020 से 31-03-2020 तक)

संरक्षक सदस्य

01. श्रीमती वैजयन्तीबेन बी. शाह, ईडर (गुजरात)
02. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम, उदयपुर (राज.)
03. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जनकपुरी, जयपुर (राज.)
04. सुवर्णा मुन्दुरी सेवा प्रतिष्टान, कोलकाता (प.बंगाल)
05. श्री जम्बू कुमार जैन एडवोकेट, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
06. श्री धर्मचन्द जैन पहाड़िया, जयपुर (राज.)

परम सम्मानित

01. श्री अपूर्वा आर. अन्निगेरी, हुबली (कर्नाटक)

विशिष्ट सदस्य

01. श्री हेमराज विनोद कुमार जैन, टोंक (राज.)
02. श्रीमती सुरेखा आर. अन्निगेरी, हुबली (कर्नाटक)
03. श्री अनिल जैन टोंग्या, डीमापुर (नागालैण्ड)

आजीवन सदस्य

01. मेसर्स सुरेश जनरल स्टोर, फागी, जयपुर (राज.)
02. श्री टी.सी. जैन, पंचकूला (हरियाणा)
03. श्री अजित प्रसाद जैन, पंचकूला (हरियाणा)
04. श्री पी. अनानिहा राजा, ऐरावली, मुम्बई (महा.)
05. श्रीमती शर्मिला पारस जैन बकलीवाल, औरंगाबाद (महा.)
06. श्रीमती निर्मला जैन, पंचकूला (हरियाणा)
07. चन्दादेवी सेठी, अजमेर (राज.)

मंदिरों को भेजी गई दानराशि (01-02-2020 से 31-03-2020 तक)

1. 14.02.20 श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर हीरामन घाटी, लश्कर, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)	25,000.00
2. 18.02.20 श्री महावीर वर्धमान भवन जिनालय ट्रस्ट वालापण्डल तह.-अरकोट, जिला-वेल्लूर (तमिलनाडु)	1,00,000.00
3. 18.02.20 श्री चंद्रनाथ स्वामी संस्थान खोलापुर मु.पो.-खोलापुर, तह.-भातुकुली, जिला-अमरावती (महा.)	50,000.00
4. 18.02.20 श्री १००८ भगवान शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मु.पो.-सुजानपुरा, तह.-बलदेवगढ़, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)	25,000.00
5. 18.02.20 आदिनाथ स्वामी बसदि समिति जैन पोटे पोस्ट-अलादनगडी, बेलथंगडी (कर्नाटक)	50,000.00
6. 20.02.20 श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन भवन प्रबंधकारिणी ट्रस्ट टिण्डीवनम्, विल्लुपुरम् (कर्नाटक)	1,00,000.00
7. 24.02.20 श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर हीरामन घाटी, लश्कर, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)	25,000.00
8. 04.03.20 श्री १००८ सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर (नसियां जी) बोराज, तह.-दूदू, जिला-जयपुर (राज.)	1,00,000.00
9. 04.03.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर लक्कावल्ली (कर्नाटक)	63,500.00
10. 12.03.20 श्री १००८ चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सिरजगांव, जिला-अमरावती (महा.)	25,000.00
11. 12.03.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)	5,00,000.00
12. 18.03.20 श्री दिगम्बर जैन सहयांचल सिद्धक्षेत्र (विजयन्तिगिरि) सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट कमेटी, पानीगांव, जिला-देवास (म.प्र.)	1,00,000.00
योग	**11,63,500.00**

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय पदाधिकारियों की ऑनलाइन मीटिंग संपन्न

२१ मई २०२० को श्री शांतिनाथ भगवान के जन्मकल्याणक के अवसर पर जूम एप पर आनलाइन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय पदाधिकारियों की एक मींटिग महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी की अध्यक्षता में हुयी। इस मींटिग में तीर्थ संरक्षिणी महासभा के कार्याध्यक्ष श्री एम.के. जैन, चेन्नई , धर्मचंद जैन पहाड़िया, जयपुर महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी, कोलकाता, वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री कमल कुमार जैन रांवका, मंत्री श्री तेज कुमार वैद, इंदौर धर्म संरक्षिणी महासभा के महामंत्री श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या, चेन्नई ने भाग लिया। मींटिग में कार्याध्यक्ष श्री धर्मचंद जी जैन पहाड़िया ने प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिये ५० हजार गुल्लकें भारतवर्ष में रखवाने की बात कही जिसकी सभी केन्द्रीय पदाधिकारियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके उपरान्त सभी पदाधिकारियों की सहमति से महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी ने आपको राष्ट्रीय गुल्लक योजना प्रमुख के पद पर सुशोभित किया आपने सहर्ष इस पद को स्वीकार किया। तत्पश्चात पुनः दिनांक २६ मई २०२० को भगवान धर्मनाथ के मोक्ष कल्याणक के दिन आनलाइन जूम एप पर तीर्थ संरक्षिणी महासभा की मींटिग में काफी संख्या में पदाधिकारियों ने भाग लिया। मंगलाचारण तीर्थ संरक्षिणी महासभा के वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री कमल कुमार जैन रांवका ने किया तत्पश्चात आपने गुल्लक योजना के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी दी। महामंत्री राजकुमार जैन सेठी ने अपने विचार रखे। सभी ने गुल्लक योजना में विशेष रूप से सहयोग प्रदान करने की सहमति दी। श्री नीरज जैन, पाण्डिचेरी ने बताया कि हमारे यहां करीब २२० परिवार है इन परिवारों में गुल्लकें वितरण करवाये जाने की स्वीकृति आपने प्रदान की शीघ्र ही आपको गुल्लकें भेजी जा रही है।

-राजकुमार जैन सेठी, महामंत्री

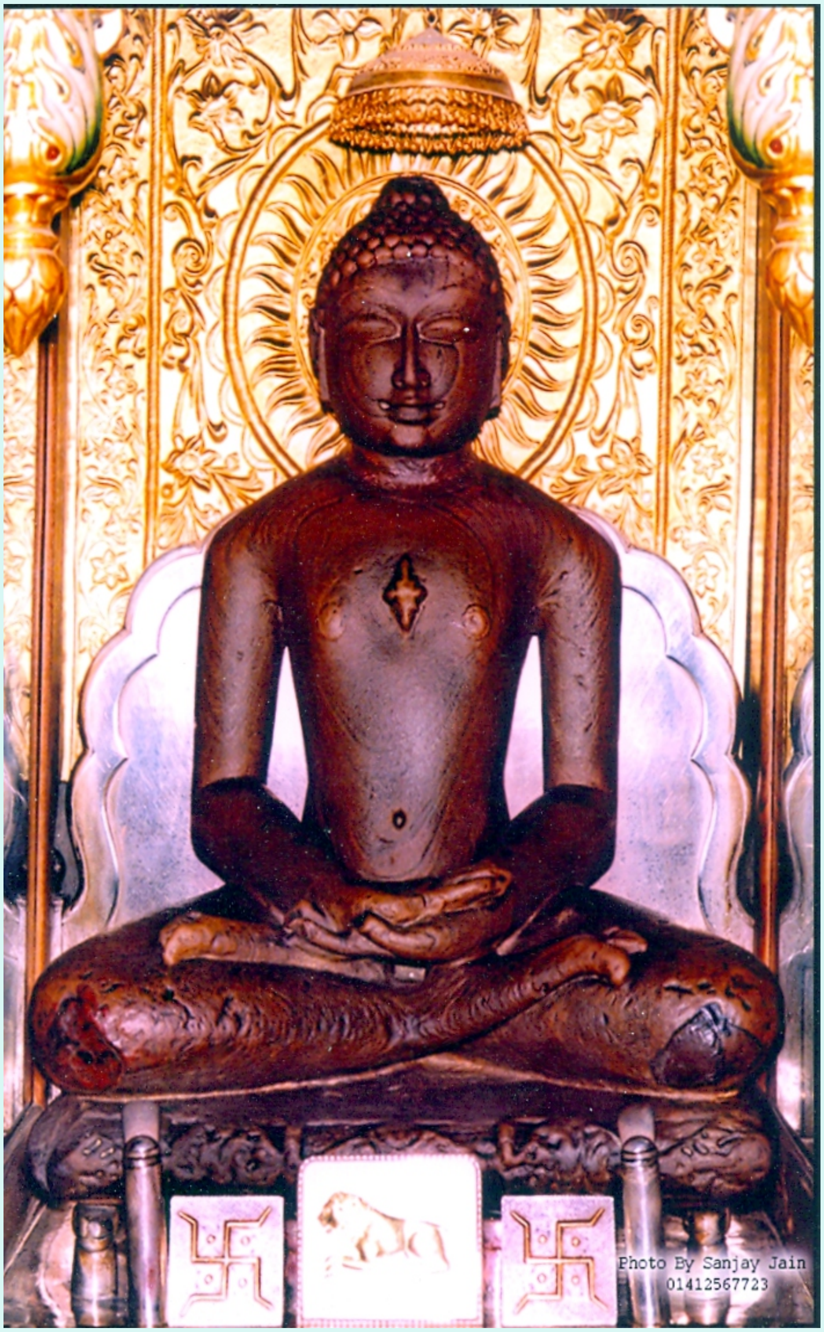

भगवान महावीर, महावीरजी

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SIDDHO MAL TRADING LLP

612-618, Narain Manzil, 6th Floor, 23, Barakhamba Road
New Delhi-110001

Tel : 23327860, 23324796

E.mail : Inoxgroup@gfl.co.in

सेवा में,

....

....

....

ISSN : 0972-4737
Pracheen Tirth Jirnodwar, June 2020
RNI No.- : UPHIN/2001/05232
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/61-2020-2022
Posted at R.M.S., Charbagh, Lucknow-4 on Every Month 15/20
एक प्रति का मूल्य रुपये 30 वार्षिक सदस्यता शुल्क रुपये 300
कुल पृष्ठ 36

With Best Compliments from :

PATNI GROUP OF COMPANIES

PCS Technology Ltd.

Ashoka Computer Systems Pvt. Ltd.

PCS Cullinet Pvt. Ltd.

PCS Finance Pvt. Ltd.

Patni Financial Advisors (p) Ltd.

Office :
310-316, Raheja Chambers,
Free Press Journal Marg, Nariman Point,
Mumbai - 400021 India
Phone : +91 22 22822621
Fax : +91 22 22851489

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा' (स्वामी का नाम) की ओर से सुधीश जैन (मुद्रक) द्वारा माहेश्वरी प्रिन्टर्स,
मोतीनगर, लखनऊ से मुद्रित तथा सुधीश जैन (प्रकाशक) द्वारा प्रकाशित। सम्पादक : प्रोफेसर भागचन्द्र जैन 'भास्कर'

If Undelivered Please Return to- S.B.D.J. (T.S.) Mahasabha, Nandishwar Flour Mill Compound, Mill Road, Aishbagh, Lko.-226004 (U.P.)